

ईसाइयत का विश्वव्यापी षडयंत्र



विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ

भूमिका

पोप की भारत यात्रा और मतान्तरण के औचित्य के सम्बन्ध में देश में गरमागरम बहस चल रही है। इस कारण ईसाई मत की भूमिका तथा उसकी कालोचितता कड़े परीक्षण के दायरे में आ गयी है। यात्रा तो सम्पन्न हो गयी; परन्तु पोप के वक्तव्यों से लोगों में सन्देह निरस्त होने के बजाय ईसाई मत की धार्मिक साख पर ही प्रश्न-चिन्तन लग गया है। तीसरे सहस्राब्द (ईसवी) में एशिया को ईसाई बनाने का पोप का सन्देश उनके साम्राज्यवादी आशय और षड्यन्त्र को ही उजागर करता है। अतः आज के अशान्त समय में इस पुस्तक का प्रकाशन बड़ा ही महत्वपूर्ण है।

पोप द्वारा भारत में रहने वाले ईसाई लोगों पर अपनी संख्या बढ़ाने का जो दायित्व सौंपा गया है, इसके लिए मतान्तरण ही एकमात्र साधन है। जिन हिन्दुओं ने कभी गैर-हिन्दुओं को शरण दी, उन्होंने कभी सोचा भी नहीं होगा कि वे ही उनके मतान्तरण के खतरनाक खेल के शिकार होंगे।

मनुष्य के जीवन में उसकी पारम्परिक श्रद्धा बड़ी मूल्यवान् वस्तु होती है, मिशनरी उसी पर आघात करता है। मतान्तरण के प्रत्यक्ष राजनीतिक परिणाम अब अनुभूत तथ्य हैं, मतान्तरण हिन्दू समाज पर सीधा आक्रमण है। अपार विदेशी धन का प्रवाह व उससे चालित विद्यालय, अस्पताल तथा अनाथालय मछली फँसाने की कटिया बन गये हैं। यह पुस्तक मतान्तरण के भिन्न आयामों पर प्रकाश डालती है।

ईसाइयत का यह दावा कि ईसा की शरण में जाना ही मुक्ति प्राप्ति का एकमात्र रास्ता है, एकदम झूठ है। उपासना का स्वरूप कैसा भी हो, व्यक्ति स्वर्ग ही नहीं, मोक्ष तक प्राप्त कर सकता है, ऐसी हिन्दू धर्म की अविचल मान्यता है।

देश की सुरक्षा की दृष्टि से विदेशी मिशनरियों की उपस्थिति अधिक चिन्ता का कारण है। भारतीय ईसाइयों में से भी बिशप, आर्कबिशप और कार्डिनल बन सकते हैं। दुनिया के किसी भी देश से मिशनरी आयात करने की आवश्यकता नहीं है। कोई भी देश अपनी सुरक्षा का खतरा मोल नहीं ले सकता।

बहुसंख्यकों को सतत चिढ़ाने वाला कोई भी हो, यह खेल उसे मँहगा पड़ेगा। अतः भारत में हिन्दुओं के साथ ईसाई बन्धुता और सद्भाव से रहें, इसी में बुद्धिमत्ता है।

डॉ० श्रीपति शास्त्री- पुणे विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग में आचार्य एवं विभागाध्यक्ष रहे। सामाजिक विषयों के अध्ययन के साथ-साथ वे 'भारत में ईसाइयत' विषय के ख्यातिनाम अध्येता हैं।

श्रीपति शास्त्री

(डॉ० श्रीपति शास्त्री)

ईसाइयत का विश्वव्यापी षड़यन्त्र

लेखक
अधीश कुमार

शारदा पुस्तकालय

(संभाषण शा. का. केन्द्र)

क्रमांक..... 1099

विश्व संवाद केन्द्र
लखनऊ

प्रकाशक :

विश्व संवाद केन्द्र

डी/२, पार्क रोड-६,

लखनऊ-२२६००१

दूरभाष : ०५२२-२१६२३५

ई-मेल :

samvad@lw1.vsnl.net.in

सहयोग राशि : रु. ५/- मात्र

प्रकाशन तिथि :

गुरुनानक जयन्ती,

२३ नवम्बर १९८८

मुद्रक :

नूतन आफसेट मुद्रण केन्द्र,

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-४

(दूरभाष : ६६१३८४)

आवरण सज्जा :

श्री योगेन्द्र नाथ योगी

अनुक्रमणिका

१. ईशपुत्र ईसा ?	३
२. क्या चर्च का निर्माण ईसा द्वारा हुआ है ?	६
३. ईसाई जगत में तहलका मचा देने वाला रहस्योद्घाटन	७
४. ईसाइयत का इतिहास बनाम पोप की परम्परा	८
५. भारत पर ईसाइयत का आक्रमण	१३
६. १९वीं शताब्दी में भारत में ईसाइयत का विस्तार	१६
७. भारत को गुलाम बनाया- ईसाइयत के सहारे	१७
८. क्या केवल ईसाई सेवा करते हैं ?	१८
९. नारा के प्रति ईसाइयत की दृष्टि	१९
१०. नरक की फरिश्ता	२१
११. क्या ईसाई समाज में जातीय भेदभाव नहीं ?	२२
१२. ईसा के नाम पर जनता को धोखा	२३
१३. मतान्तरण के लिए चर्च के हथकण्डे	२४
१४. साम्राज्यवाद की रक्षा के लिए अंग्रेजी में शिक्षा	२५
१५. सेवा नहीं मतान्तरण ही	२६
१६. विस्तार की ईसाई नीति	२८
१७. नियोगी कर्मशन व अन्य आयोग	३०
१८. विदेशी धन से मतान्तरण	३४
१९. चर्च के आंकड़ों में २००० वर्ष	३६
२०. ईसाइयों की गतिविधियाँ	३७
२१. ओपेस-डेई	३८
२२. संस्कृतियों का विनाश	४०
२३. सेकुलर देशों में चर्च का हस्तक्षेप	४३
२४. साम्राज्यवाद की चौथी सेना	४४
२५. पोप की दिल्ली घोषणा	४५
२६. नेपाल में ईसाइयत का कुचक्र	४८
२७. चर्च का अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र	५०
२८. भारतीय जनगणना के आंकड़े	५२
२९. वैटिकन-वाशिंगटन गठजोड़	५४
३०. अपना मोहरा बनाना चाहते हैं भारत को	५४
३१. विदेशी चर्च की गुलामी	५५
३२. उत्पिण्डत जाग्रत	५६

ईशुपुत्र ईसा ?

इस समय सारे विश्व में ईसा या यीशू के २०००वें जन्मदिन की चर्चा है, किन्तु उनका जन्मदिन और जीवन विवाद का विषय बने हुए हैं। ईसाई मान्यता के अनुसार नाजरथ नगर की निवासिनी मेरी (मरियम) नामक अविवाहित कन्या का विवाह यूसुफ नाम के एक युवक से तय हुआ था, उसको एक देवदूत द्वारा सूचित किया गया कि परमेश्वर ने प्रथम स्त्री पुरुष हौवा और आदम को अदन के बाग में जो वचन दिया था कि मानव जाति को उसके पापों से बचाने के लिए एक दिन अपने पुत्र को इस दुनिया में भेजेगा, उसी वचन को निभाने के लिए वह शीघ्र एक बेटे को जन्म देगी।

कुमारी के पुत्र

अविवाहित मेरी चिन्तित हुई, युवक ने भी मंगनी तोड़नी चाही, परन्तु स्वर्गदूत के समझाने पर उसने मेरी से विवाह कर लिया। यूसुफ नाजरथ से ७५ मील दूर 'बैतलहम' का निवासी था। जनगणना में शामिल होने के लिए अपनी गर्भवती पत्नी 'मेरी' के साथ चला, परन्तु रात्रि होने पर नगर में कोई 'सराय' रुकने को नहीं मिली, अतः मजबूरन पशुशाला में रात काटनी पड़ी और वहीं मेरी के पुत्र ईसा या यीशू का जन्म हुआ।

सुसमाचार

रात्रि को बैतलहम की खुली पहाड़ियों पर अपनी भेड़ों के साथ सो रहे चरवाहे एकाएक तेज चमक की रोशनी से जाग गये। स्वर्गदूत ने उन्हें शुभ सन्देश सुनाया कि परमेश्वर के इकलौते पुत्र, मानव के उद्धारकर्ता ने बैतलहम में जन्म लिया है। चरवाहों ने ईसा के दर्शन कर सर्वत्र घटना की चर्चा की। पूर्व के देश से कुछ ज्योतिषी भी एक अद्भुत तारा देखकर यूसुफ के मकान पर आकर यीशू का दर्शन कर गये।

जब बैतलहम के राजा को बताया गया कि असली राजा जन्मा है, तो उसने राज्य में दो वर्ष तक की आयु के सब बच्चों को मार डालने का आदेश दिया, परन्तु स्वर्गदूत से चेतावनी पाकर मेरी और यूसुफ ने ईसा को मिस्र ले जाकर उसको राजा के कोप से बचाया। १२ वर्ष की आयु में यीशू को लेकर यूसुफ और मेरी येरूशलम मन्दिर में गये, परन्तु लौटते में यीशू साथ नहीं मिला। दो दिन बाद वह मन्दिर में पुजारियों से शास्त्रार्थ करता मिला।

पर्वत पर प्रवचन

१८ वर्ष बाद ३० वर्ष की आयु में ईसा वापिस आये। अब वह उपदेश देते और चमत्कार दिखाते थे। उनका उपदेश सुनने बड़ी भीड़ आती। एक दिन उन्होंने पहाड़ी पर चढ़कर

प्रेम और शान्ति का उपदेश दिया, जो Sermon On the Mount कहलाता है।

विश्वासघाती शिष्य

तीन वर्ष तक इस प्रकार उपदेश करने के बाद ईसा ने अपने शिष्यों को बताया कि उसकी मृत्यु आने वाली है, परन्तु चिन्ता न करना, कुछ दिनों में वह पुनर्जीवित हो उनसे मिलेंगे। ईसा के एक शिष्य ने चाँदी के ३० टुकड़ों के बदले ईसा से गद्दारी कर पकड़वा दिया। ईसा को न्यायालय ने तो छोड़ दिया, परन्तु सैनिक उनको रोमन गवर्नर पिलातुल के पास ले गये, जिसने ईसा को मृत्युदण्ड सुनाया।

क्रास पर चढ़े

ईसा के कपड़े उतार कर पुराने कपड़े और काँटों का मुकुट पहना कर क्रास पर बाँधा गया। उसे अपमानित किया, थप्पड़ मारा गया, उस पर थूका गया और उसे गालियाँ दी गईं। हाथ-पाँव में कील ठोक कर मरने के लिए क्रास पर छोड़ दिया। तीन घण्टे बाद उसकी आँत में बरछा भोंक कर पानी और खून निकलते देखकर उसकी मृत्यु की पुष्टि की गयी। तब ईसा के शव को एक गुफा में रखकर भारी पत्थर से गुफा का मुँह ढक दिया।

ईसा का पुनरुत्थान या रिसरेक्शन (Resurrection)

तीसरे दिन बाद गुफा का पत्थर अपने आप लुढ़क गया और ईसा 'नाजरथ' की ओर उठ कर चले गये। उनके बदले रूप को उनके शिष्य भी नहीं पहचान सके। चालीस दिन तक उपदेश देने के बाद वे सशरीर स्वर्ग चले गये।

यह है बाइबिल में उल्लेखित ईसा का जीवन-वृत्तान्त, जिसमें प्रारम्भ में जन्म के पूर्व से तीन वर्ष की आयु तक, फिर बारहवें वर्ष में येरूशलम में और फिर जीवन के अन्तिम तीन वर्ष का वर्णन है। ईसा का शेष जीवन कहाँ बीता ? बाइबिल इस पर मौन है।

ईसा का जन्मदिन

प्रारम्भ में ६ जनवरी, जो इसराइल में सामूहिक भोज-दिवस (Feast of Nativity) मनाया जाता था, को जन्मदिवस बताया, जिसको ईसवी सन् ३५३-५४ में पोप लिबेरियस द्वारा बदल कर २५ दिसम्बर घोषित कर दिया गया। ग्रीक चर्च आज भी ७ जनवरी को ईसा का जन्म दिन मनाता है। रोमन सम्राट् द्वारा कहे जाने पर सन्त डायनीसियस एक्सीनस ने सन् ५३० ई० में २५ दिसम्बर, जो जूलियन कलैण्डर के अनुसार सूर्य का जन्मदिन होता था, को ईसा का जन्मदिन घोषित कर दिया।

(लाइफ ऑफ क्राइस्ट - लेखक डीन फरार)

क्रिश्चियन

ईसा की तीसरी शताब्दी में आयोजित हुई "निसिया-कौंसिल" में पहली बार 'क्राइस्ट' और 'क्रिश्चियन' शब्द स्वीकार किया गया।

बाइबिल का ईश्वर

बाइबिल में अनेक 'ईश्वरों' की चर्चा है तथा इस ग्रन्थ में 'प्रभुओं' अर्थात् 'ईश्वरों' के समुदाय की भी चर्चा है। (योशुआ ग्रन्थ, २२-१६) बाइबिल के अनुसार, इन 'ईश्वरों' में सर्वाधिक शक्तिशाली 'इसराइल का ईश्वर' है। (योशुआ ग्रन्थ, २३) 'इसराइल का ईश्वर' अपने भक्तों के साथ अनुबन्ध करता है और शपथपूर्वक किये गये इन अनुबन्धों का निर्वाह कर अपने भक्त की रक्षा करता है। उन्हें आशीर्वाद देता है, शत्रुओं को परास्त करता है और अपने भक्तों से होमबलि स्वीकार करता है। जो इस ईश्वर को दिये गये वचनों का पालन नहीं करते हैं और अनुबन्ध तोड़ते हैं, उन्हें वर्चस्व से दण्ड दिया जाता है। यह ईश्वर दूसरे राष्ट्रों पर, जहाँ उसकी (इसराइल के ईश्वर की) पूजा नहीं होती है, पर आक्रमण के आदेश देता है। (योशुआ, ८-१ व २४)

बाइबिल के अंग्रेजी अनुवाद में जहाँ कहीं भी 'ईश्वर' शब्द का प्रयोग हुआ है, उसका आशय उस दैवी सत्ता से है, जिसकी उपासना प्राचीन इसराइल में हुआ करती थी। गहराई में जाकर देखा जाये, तो पता चलता है कि 'ईश्वर', 'प्रभु' अथवा 'परमात्मा' शब्द से जो आशय भारतीय मनीषा का रहा है, वैसा कोई भी आशय बाइबिल में उल्लिखित 'गॉड' या 'ईश्वर' से नहीं है और इसीलिए इस ग्रन्थ में बार-बार दूसरे 'ईश्वरों' को 'पराया देवता' कहकर सम्बोधित किया गया है। बाइबिल में केवल 'इसराइल के ईश्वर' की ही उपासना करने एवं पराये देवताओं का बहिष्कार करने के अनेक प्रसंग हैं। योशुआ के ग्रन्थ में चौबीसवें अध्याय के तेइसवें पैरा में भी ऐसा ही उल्लेख है।

(पुस्तक "हिन्दुत्व" से- ले० नरेन्द्र मोहन)

चर्च

ईसाइयत अपना परिचय 'चर्च' कह कर देती है। 'चर्च' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'कूरोस' से हुई है, जिसका अर्थ होता है- 'शक्तिशाली'। यह संस्कृत शब्द 'शूर' से विकृत होकर बना है। इसलिए लड़ाकूपन ईसाइयत की विशेषता है।

क्या चर्च का निर्माण ईसा द्वारा हुआ है ?

ईसा के नाम पर बाइबिल में जोड़े गये सन्देश यहूदी समाज में पहले से ही प्रचलित थे। सेण्ट पॉल ने ईसा के नाम पर सिद्धान्त गढ़े, जिन्हें जॉन ने साहित्यिक भाषा में लिखा। बहुत बाद में मार्क, लूका और मैथ्यू ने उस समय की उपलब्ध पुस्तकों के आधार पर लिख कर उसे 'ईसा का सुसमाचार' कहा और ईश्वरीय पुस्तक कहकर उसकी आलोचना के लिए मृत्युदण्ड घोषित किया।

१७ अगस्त १६१७ को कैम्ब्रिज में आयोजित मॉर्डन चर्चमैन्स कान्फ्रेंस में विषय था "क्या क्राइस्ट ने चर्च की स्थापना की थी?" रेव०सी०डब्ल्यू० एनमेट, विशप मरसर, रेव०एल० पैटरसन, रेव० मेजर, रेव० सिमोण्ड, रेव० एफ०मान० जैसे प्रमुख पादरियों का मत था— "ईसा ने न तो कभी अपने को परमेश्वर कहा और न ही यहूदियों से अलग कोई संस्था बनाने की इच्छा की।"

स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही कहा है— "ईसाई चर्च ईसा को अपने मत के अनुसार गढ़ने की चेष्टा कर रहा है, किन्तु स्वयं को ईसा के जीवनादर्श के अनुसार गढ़ने की चेष्टा नहीं करता।"

(विवेकानन्द साहित्य भाग-७, पृष्ठ-४०)

क्रिश्चियनिटी नहीं चर्चैनिटी.

जर्मन विद्वान् होल्जर क्रेस्टेन द्वारा लिखित पुस्तक 'जीसस लिब्ड इन इण्डिया' १६३६ में मूल जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई, तब से १५ यूरोपीय भाषाओं में उसका अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। ब्राजील में उसके कई संस्करण छपे हैं। १६६४ में पहला अंग्रेजी अनुवाद छपा। १६६६ तक उसके ५ संस्करण छप चुके हैं। पुस्तक के अन्त में सन्दर्भ पुस्तकों की लम्बी सूची दी गयी है, जिनके आधार पर विद्वान् लेखक ने निष्कर्ष निकाले हैं—

"आज जो कुछ हम ईसाइयत के नाम पर देख रहे हैं उसका ईसा मसीह की मूल चेतना से कोई सम्बन्ध नहीं है, वह मात्र 'चर्चैनिटी' है। ईसा का जो रूप चर्च द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है, वह उनके मूल रूप से भिन्न है। चर्च ईसा का जीवन उनके तीसवें वर्ष से आरम्भ करता है। उसके पहले के ३० वर्ष, जब ईसा ने भगवान् बुद्ध का अवगाहन किया था, चर्च छोड़ देता है; ईसा का जीवन और उपदेश करुणा और सेवा पर अधिष्ठित है, जबकि चर्च प्रारम्भ से राज्य की छत्रच्छाया में पला और हमेशा ही साम्राज्यवाद और युद्धों का हस्तक बना रहा।"

भारतीय मनीषी स्वामी विवेकानन्द, स्वामी अभेदानन्द, योगी अरविन्द और महात्मा गांधी ने भी कहा था— "हम ईसा को स्वीकार कर सकते हैं, परन्तु ईसाइयत को नहीं।"

ईसाई जगत में तहलका मचा देने वाला रहस्योद्घाटन

फिलीस्तीन में लगभग ५० वर्ष पूर्व २००० वर्ष से अधिक पुराने अर्थात् ईसा के कथित जन्म से भी शताब्दियों पूर्व के दस्तावेजी प्रमाण प्राप्त हुए। जिसमें क्यूमरेनियंस (Qumranians) नाम कट्टरपन्थी यहूदी पन्थ की गाथाएँ उल्लेखित थी। Dead Sea Scrolls (डेड सी स्क्रॉल्स) नाम से प्रसिद्ध इन दस्तावेजों से सिद्ध हुआ है कि मसीहा शब्द और उसके द्वारा रोगियों को स्वस्थ करना, मुर्दों को जिन्दा करना आदि चमत्कार तथा क्रूस पर चढ़ाना, शिष्यों के साथ अन्तिम भोजन और न्यू टेस्टामेंट में दिये कुछ कथानक ईसा के कथित जन्म से शताब्दियों पहले से उस क्षेत्र में प्रचलित थे।

वेटिकन ने प्रयास पूर्वक ४० वर्ष तक इन सबूतों को सामने आने से रोका। परन्तु बाइबिल के प्रसिद्ध विद्वान जॉन एलेग्री तथा नील अशर सिल्वरमैन द्वारा इन प्रमाणों को प्राचीनता सिद्ध होने पर १९६१ में सार्वजनिक जानकारी में आये। इस घटना ने ईसा, बाइबिल और ईसाइयत की सत्यता पर प्रश्नचिह्न लगा दिये हैं। पश्चिमी प्रचार माध्यमों ने इसको इस दशक का सबसे महत्त्वपूर्ण समाचार स्वीकार किया है।



क्या २.५ प्रतिशत ईसाई जनसंख्या भारत में आक्रामक हो सकती है ?

- भारत के विरुद्ध प्रचार के लिए मात्र जनसंख्या ही आधार नहीं है। गुजरात में हुए कथित ईसाई विरोधी दंगों (१९६८) में एक व्यक्ति मरा नहीं, फिर भी देश-विदेश के प्रचार-माध्यमों ने हिन्दू विरोधी वातावरण बनाया।

प्रमुख भारतीय ईसाई नेता फादर पी, अगस्टाइन कजमाला ने अपनी पुस्तक "Integral Mission Dynamics" में स्पष्ट लिखा है- "भारत में चर्च का प्रभाव उसकी जनसंख्या से कई गुना अधिक है।" (पृष्ठ-३६६)

"उपनिवेश काल में बहुत थोड़े से विदेशी शासन कर रहे थे और उसमें भारतीय मतान्तरितों ने सहयोग किया था।

- पिछले २० वर्ष में दक्षिण अफ्रीका में ईसाई जनसंख्या २ प्रतिशत से बढ़कर ४० प्रतिशत हो गयी।
- पूर्वी तिमोर गत २० वर्ष में ईसाई बहुल होकर, मुस्लिम इण्डोनेशिया से अलग हो गया।

ईसाइयत का इतिहास बनाम पोप की परम्परा

ईसा की मृत्यु के समय तक उसके १३ शिष्य बने थे, जिनमें से एक (तेरहवें) शिष्य के विश्वासघात के कारण ईसा को बन्दी बनाया गया (ईसाई मतावलम्बी इसीलिए आज तक १३ की संख्या अशुभ मानते हैं।)

रोमन साम्राज्य, जो तब ईसा के कार्यक्षेत्र येरूशलम तक फैला था, उसके प्रतिनिधि ने ईसा को मृत्युदण्ड देकर सूली पर लटका देने का आदेश दिया। न्यायालय के आदेश पर ईसा का कोई भी शिष्य सूली (Cross) उठाने के लिए उनकी सहायता को नहीं आया, तो स्वयं ईसा को ही अपना क्रॉस वध-स्थल तक उठाकर ले जाना पड़ा।

साम्राज्यवाद के रूप में फैली ईसाइयत

ईसाइयत के वर्तमान विस्तार का प्रारम्भ हुआ रोम के शक्तिशाली सम्राट् कान्स्टेण्टाइन (३१२-३३७ ई०) के काल में, वहाँ प्रचलित पूजा-पद्धति, जिसका आज ईसाई धृणित रूप में (Pagan) पैगन शब्द से उल्लेख करते हैं, में मूर्ति पूजा का विधान था; पुरोहितों की व्यवस्था थी। सम्राट् का निजी कारणों से उस पुरोहित व्यवस्था से, जो रोमन समाज में मजबूत जड़ जमा चुकी थी, संघर्ष हो गया। सम्राट् ने अपनी राजशक्ति का प्रयोग कर पुरोहित व्यवस्था को नष्ट कर दिया। साथ ही वह फिर से पुनर्जीवित न हो जाये, इसलिए मन्दिरों को तोड़ कर पुरोहितों की सम्पत्ति को लुटवा दिया गया सम्राट् ने अज्ञात से पन्थ 'ईसाई मत' को स्वीकार कर लिया। ईसाइयत को राजधर्म घोषित कर कान्स्टेण्टाइन ने स्वयं को ही सर्वोच्च नियन्त्रक भी घोषित कर दिया। ईसा के प्रेम और करुणा के स्थान पर ईसाइयत, साम्राज्यवाद का नया नाम हो गया। राजधर्म बनकर ईसाइयत को सम्पूर्ण रोमन साम्राज्य में, जो उस समय सम्पूर्ण यूरोप से मध्यपूर्व एशिया तक फैला था, विस्तार का अवसर मिला। रोम के चर्च ने यूरोप के राजाओं की सहायता से जर्मन, केल्ट, स्कैन्डीनेवियन और स्लाव जातियों को तलवार और आगजनी से जबरिया ईसाई बनाया।

रोम का बादशाह 'कान्स्टेण्टाइन' अवसरवादी राजनेता था। वह अग्निपूजक था ईसाई नहीं था, परन्तु पूर्वी 'चर्चों' ने उसको 'सन्त' घोषित किया।

उसने ३१८ बिशपों को ई० सन् ३२५ में Ecumenical Council of Nice में बुलाकर एक प्रस्ताव पास कराया, जिसमें घोषित किया गया था कि ईसा 'ईश्वर का पुत्र' था और इस प्रस्ताव पर अपनी मुहर लगाकर उसको राजकीय मान्यता दी। ७ मार्च ३२१ को उसने रविवार को पवित्र दिन मानने की मान्यता दी।

ईसा की मृत्यु के बाद, उनकी शिक्षा को उनके ही जन्मस्थान पर भुला दिया गया और लगभग ३ शताब्दी बाद ईसाइयत ने रोमन साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। एक धन-सम्पन्न चर्च रोम में निर्मित हो गया। धन और शासन के प्रभाव का उपयोग कर चर्च ने अपने प्रतिनिधि प्रीस्ट, बिशप तथा मैट्रोपोलिटन सहित ईसाई भिक्षुओं तथा धर्म प्रचारकों की सेना खड़ी कर दी।

साम्राज्य की सत्ता के बल पर सुविधा भोगनेवाले इस भिक्षुओं की सेना, जो मठों में रहती थी, सारे रोम-साम्राज्य की सड़कों पर उपद्रव करने को स्वतन्त्र हो गयी। धीरे-धीरे साम्राज्य के भीतर एक दूसरी राज्य-शक्ति के रूप में चर्च विकसित हो गया।

पाँचवीं शती में जर्मनी व अन्य आक्रमणकारियों के कारण रोमन साम्राज्य टूटने लगा। सातवीं, आठवीं शताब्दी में उत्तर अफ्रीका और एशिया का बड़ा भाग इस्लामी आक्रमण के कारण रोम साम्राज्य से अलग हो गया।

रोम का बिशप, जो रोमन सम्राट् के अधीन अन्य बिशप जैसे- अलेक्जेंड्रिया, एन्टीओक, कान्स्टेंटिनोपल और येरूशलम के समान चर्च का अधिकारी था, अन्य चर्चों के नष्ट होने तथा सम्राट् की शक्ति कम होने पर ईसाई जगत् में प्रभावी होने लगा।

राजसत्ता में दखल

पूर्वी दुनिया में इस्लाम का प्रभाव बढ़ने पर चर्च ने पश्चिमी विश्व में प्रसार के लिए अब राजघरानों पर दृष्टि डाली, जो चर्च के जाल में फँस सकें। ८वीं शताब्दी में फ्रान्स में चार्ल्स मार्टिन एक उदीयमान राजसत्ता अधिकारी था, उसका सहारा पाकर पोप रोमन साम्राज्य के प्रति जिसका केन्द्र कान्स्टेंटिनोपल हो गया था, उपेक्षापूर्ण व्यवहार करने लगा।

सन् ७५१ में चार्ल्स मार्टिन के पुत्र पेपिन के फ्रांस का शासक बनते ही चर्च ने उसका

St. Cyril of Alexendria - 380-440

अलेक्जेंड्रिया में स्थित ग्रीक साहित्य का विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय जलाने वाले साइरिल ने ४१२ ई० में अलेक्जेंड्रिया का बिशप बनने पर ईसाई साधुओं की एक भीड़ लेकर हाइपेशिया (Hypatia) नामक महिला सन्त पर आक्रमण किया। उक्त महिला प्लेटो की आध्यात्मिक परम्परा का पालन करती थी। ईसाई साधुओं ने उसके वस्त्र फाड़कर निर्वस्त्र किया और सड़कों पर खींचते हुए ले गये, जहाँ उसके अंग-अंग काट कर हत्या की गयी और उसके मांस को हड्डियों से अलग कर आग में जला दिया गया। ईसाई मत की इस महान् सेवा के लिए साइरिल को १८८२ में पोप लियो-१३ द्वारा 'सन्त' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

आश्रय ले लिया और इसका भावी परिणाम हुआ कि रोमन कैथोलिक चर्च ने अपने को अपनी मातृसंस्था से, जो अब ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च कहलाने लगी थी, पृथक् कर लिया।

सन् ८०० में जब तत्कालीन पोप लियो तृतीय (७९५-८१५), जो अपने कुकृत्यों द्वारा रोम में बदनाम हो रहा था, ने क्रिसमस दिवस के सम्मेलन में फ्रान्सीसी शासक चार्ल्स मैग्ने के माथे पर रत्नजड़ित मुकुट रखकर उसको रोमन सम्राट् घोषित कर दिया। इस घटना से पोप की भूमिका राजाओं का निर्माण करने वाली हो गयी।

धोखाधड़ी की परम्परा — कान्सटेंटाइन और पेपिन का दान

आठवीं शती के मध्य में पोप ने घोषित किया कि चौथी शती में ईसाई मत स्वीकार करते समय कान्सटेंटाइन ने पोप सिल्वेस्टर को अपना राजमहल- रोम नगर और इटली सहित यूरोप का सम्पूर्ण राज्य एक वसीयत द्वारा दिया चुका है। इस आधार पर वह इटली का शासक बन बैठा। फ्रान्स के राजा पेपिन के एक जाली पत्र के आधार पर पोप ने राजा से भी अधिक अधिकार प्राप्त कर लिये।

परन्तु १४४० ई० में लगभग ६०० वर्ष बाद इटली के एक मानवतावादी विद्वान् लोरेन्जो वाल्ला ने अपने शोध कार्य द्वारा उक्त दस्तावेज को धोखाधड़ी सिद्ध कर दिया।

क्रूसेड (धर्मयुद्ध)

१०९५ में पोप अरबन द्वितीय द्वारा मुस्लिम आक्रमणकारियों के विरुद्ध क्रूसेड की घोषणा ने उसको राजनीति का केन्द्र-बिन्दु बना दिया। साथ ही सभी ईसाई देशों के क्षेत्र की आधी-आधी सम्पत्ति चर्च की स्वीकार कर ली गयी, जिस पर कर लगाकर चर्च धन एकत्र करता था। ईसाई मजहबी अदालतों को आम जनता को दण्डित करने का अधिकार प्राप्त हुआ। पोप अब राजनीति में खुले आम भाग लेकर एक राजा के विरुद्ध दूसरे राजा का समर्थन कर प्रभाव जमाता था।

साम्राज्यवादी पोप

पोप हैडरियन चतुर्थ, ने जिसने अपने नाम के साथ होली (Holy) 'पवित्र' विशेषण लगाना शुरू किया, रोमन सम्राट् फ्रेडरिक के विरुद्ध विद्रोह कराकर उत्तरी इटली पर कब्जा जमा लिया।

पोप इन्नोसेंट तृतीय (११९८-१२१६) ने पोप के पद-ग्रहण को राजसी स्वरूप दिया। फ्रान्स के राजा फिलिप तृतीय से झगड़े के बाद उसे अपने प्रभाव में लिया और फिर १२१३ ई० में फ्रान्स की सेनाओं के द्वारा इंग्लैण्ड के राजा हेनरी पर आक्रमण करा दिया। हेनरी ने

भाग कर जान बचायी। पोप ने इंग्लैण्ड को अपने राज्य का भाग घोषित कर स्टीफन लैंग्टन को कैंटरबरी का आर्क बिशप बना दिया। १२१५ में पोप इन्नोसेंट तृतीय ने प्रसिद्ध मैग्नाकार्टा की घोषणा को अवैधानिक घोषित कर दिया। १२१५ में रोम के सम्राट् वने फ्रेडरिक ने पोप से क्रूसेड (इस्लाम के विरुद्ध धर्मयुद्ध) बन्द करने का आग्रह किया। पोप ने आग्रह स्वीकार नहीं किया और फ्रेडरिक को धर्म-विरुद्ध, चर्च-विरुद्ध घोषित कर दिया और अपनी मजहबी सेना के साथ उसके विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ कर दिया। पोप ने फ्रेडरिक को विषैला साँप घोषित कर उसको विष देने का प्रयास किया। फ्रेडरिक की मृत्यु के बाद १२५४ में उसके पुत्र मनफ्रेड ने पोप की सेनाओं को पराजित कर दिया।

रोमन साम्राज्य का अन्त

पोप अलेक्जेंडर चतुर्थ ने मनफ्रेड के अबोध बच्चों को, जो उसके हाथ पड़ गये थे, सता-सता कर मारा। फ्रान्स की सेनाओं की मदद से १२६६ ई० में मनफ्रेड को पराजित कर मार डाला। उसकी कब्र में से उसके शव को निकालकर पोप ने अपने साम्राज्य से बाहर फिंकवा दिया। १२६८ में मनफ्रेड के १६ वर्षीय पुत्र कानरेड चतुर्थ की हत्या पोप के आदेश से नेपल्स के चौराहे पर उसका सिर काट कर की गयी। मनफ्रेड की युवा पुत्री विट्राइस को पोप ने १८ वर्ष तक अपनी कैद में रखा। सम्राट् के तीन पुत्र ४५ वर्ष तक अँधेरे तहखाने में रहकर मर गये। इस प्रकार पोप ने रोम के सम्राट् के वंश का अन्त किया।

फ्रान्स की संसद् ने पोप को दण्डित किया

पोप के राजनैतिक हस्तक्षेप और अत्याचार व अनाचारों से यूरोप की जनता व वहाँ के शासक त्रस्त हो गये। फ्रान्स के शासक फिलिप चतुर्थ ने, चर्च की सम्पत्ति पर १२६६ ई० में टैक्स लगा दिया। फ्रान्स की १/४ से अधिक भूमि का स्वामी चर्च था। पोप बोनीफेस ने राजा को धमकी भरा पत्र भेजा। राजा ने दूत के सामने ही पोप का पत्र जला डाला, इस पर पोप ने अपनी तलवार की धमकी दी। राजा फिलिप ने फ्रान्सीसी संसद् की बैठक बुलाकर पोप को अत्याचारी, हत्यारा, दुष्ट, गबन करने वाला, मिलावट करने वाला, अप्राकृतिक यौन सम्बन्ध रखने वाला, अविश्वासी होने का प्रस्ताव पारित कर आरोप पत्र पोप के चेहरे पर चिपका दिया। पोप को बन्दी बनाकर भूखा मरने के लिए छोड़ दिया गया।

अत्याचारों के लिए मजा चखाया

पोप के अत्याचारों से त्रस्त देशों ने अपने को उसके साम्राज्य से मुक्त कराने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। १८०७ में नेपोलियन बोनापार्ट ने पोप के साम्राज्य के एक बड़े भाग पर कब्जा कर लिया। उसने १८०८ में रोम पर कब्जा करके पोप को पेंशन देकर पदमुक्त कर दिया।

१८५६ में आस्ट्रियो-इटैलियन युद्ध के बाद पोप का साम्राज्य मात्र ४८६१ वर्ग मील और ७ लाख से भी कम जनसंख्या में सिमट गया। १८६७ ई० इटली का प्रसिद्ध क्रान्तिकारी गैरीबाल्डी जब रोम पहुँचा और वहाँ की जनता ने पोप के अत्याचार और व्यभिचार का वर्णन किया, तब उसने क्रुद्ध होकर पोप को रोम नगर के मध्य में बहने वाली 'टाइबर' नदी में फेंकवा दिया। आश्चर्य तो तब हुआ, जब कोई भी पोप को बचाने आगे नहीं बढ़ा।

समाप्त हुआ पोप का साम्राज्य

१८७० में सेवाय के विक्टर इमैनुअल ने इटली को एक राज्य बनाकर पोप के अधिकार समाप्त कर दिये। रोम को इटली की राजधानी और पोप के क्यूटिनल महल को राजकीय आवास बना दिया गया। पोप अपने अधिकार खोकर ५८ वर्ष तक वैटिकन में बन्द रहा।

फासिस्ट मुसोलिनी निर्माता है आज के वैटिकन साम्राज्य का

१९२६ में फासिस्टवाद के संस्थापक बेनिटो मुसोलिनी ने लातेरान सन्धि कर अपने समर्थन के बदले में वैटिकन को एक अलग राज्य का दर्जा दे दिया। आज का पोप और उसका वैटिकन साम्राज्य उसी 'फासिस्ट' मुसोलिनी की कृपा का फल है।

ईसाइयत का प्रचार यूरोप में

ईसाई मजहब रोमन साम्राज्य के साथ-साथ फैला। यूरोप में पहले से व्याप्त मूर्तिपूजक (पैगन) ईसाइयत को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। पोप ने इन यूरोपवासी मूर्तिपूजकों के विरुद्ध अनेक धर्मयुद्ध 'क्रूसेड' चलाये।

१२७७ में पोप ग्रेगोरी नवम ने यूरोप में भी **Inquisition** लागू किया। इन युद्धों में स्थानीय लोगों पर भयंकर अत्याचार किये गये थे। उदाहरण के लिए दक्षिण फ्रान्स में बेजियर (**Bezied**) नामक कस्बे में प्रतिदिन २० हजार स्त्री-पुरुष, बच्चों के सिर पोप के आदेश से काटे जाते थे। वहाँ की जनता घृणापूर्वक पोप के लिए **Domini Canes** अर्थात् सामन्तों के कुत्ते का शब्द प्रयोग करती थी।

आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया महाद्वीप में यूरोप से गये ईसाई आक्रमणकारियों ने वहाँ की मूल मावरी जाति को ही समाप्त कर दिया। आज आस्ट्रेलिया में रहने वाले सभी नागरिक यूरोप से गये हैं। मावरी प्रकृति-पूजक थे और माथे पर खड़ा तिलक लगाते थे।

भारत पर ईसाइयत का आक्रमण

ईसाई मतावलम्बी भारत में चौथी शताब्दी से ही शरणार्थी के रूप में केरल आने लगे थे। भारतीय राजाओं ने इन सीरियन ईसाइयों को शरण दी, पूजाघर बनाने की अनुमति दी। वे भी भारतीय समाज से घुलमिलकर रहते रहे।

वास्कोडिगामा का आगमन

७ नवम्बर १४८८ को पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा ने कालीकट तट पर पहुँच कर तोपों से हमला किया। राजा समुद्रजयिन (जमोरिन) ने एक विद्वान् ब्राह्मण को अपना दूत बनाकर वास्कोडिगामा के पास भेजा। उसने दूत के दोनों हाथ, नाक और कान कटवा कर उसकी एक माला बनाकर दूत के गले में डाल दी और उसमें एक पत्र भी बाँध दिया कि अपने दूत के अंगों को पका कर खा लें।

सीरियन ईसाइयों पर भी अत्याचार

सीरियन ईसाइयों, जिनके रीति-रिवाज वैटिकन के कैथोलिक ईसाइयों के 'लैटिन रीति-रिवाजों' से कुछ भिन्न थे, वे भी इन आक्रमणकारियों के शिकार बने। उन पर अनेक अत्याचार हुए। बेबीलोन के बिशप को, जो इन सीरियन ईसाइयों से मिलने आये हुए थे, पकड़ कर १६५३ में जिन्दा जला दिया गया।

अत्याचार का पर्याय जेवियर

गोवा पर पुर्तगालियों का कब्जा हो जाने के बाद वहाँ ईसाईकरण का दुश्चक्र प्रारम्भ हो गया। जेवियर नामक पादरी के १५४२ में गोवा पहुँचने के बाद अत्याचारों की पराकाष्ठा हो गयी।

इन्क्वीजीशन (Inquisition)

१५६० में 'इन्क्वीजीशन' गोवा में प्रारम्भ हुआ, जिसका घोषित उद्देश्य तो ईसाई बन गये लोगों पर ईसाई कानून लागू करना था; परन्तु इसने ईसाई न बनने वालों को दण्डित करना प्रारम्भ कर दिया। गोवा में किसी भी गैर कैथोलिक को सम्पत्ति का अधिकार नहीं रहा। परिवार के एक सदस्य के ईसाई बनने पर अन्य सभी को ईसाई बनना पड़ता था, न बनने पर वे दण्डित किये जाते थे। घर में छिपा कर रखी छोटी शालिग्राम की बटिया से लेकर तुलसी का पौधा तक मृत्युदण्ड का कारण था।

हिन्दू रीति-रिवाज से विवाह करना, विवाह के अवसर पर गाना-बजाना, तला हुआ भोजन जैसे पूरी आदि बनाना, मसाला पीसना, अनाज कूटना, मण्डप या तोरण लगाना यह अपराध था। विवाह के अवसर पर उपस्थित लोगों का पान के बीड़े से स्वागत भी दण्डनीय था।

मृत्यु के अवसर पर भी घर में सामूहिक भोज अथवा गरीबों को खाना बाँटने पर रोक थी। पितृ विहीन बालक-बालिका को पादरी को न सौंप कर अपने घर में रखना जैसी बातें भी दण्ड का कारण बन जाती थीं। हिन्दू रीति-रिवाजों का पालन भी मृत्युदण्ड का कारण बन जाता था। हिन्दू पुजारी गोवा से निकाल दिये या मार दिये गये। हिन्दू रीति से धोती या यज्ञोपवीत पहनना, चन्द्रग्रहण-एकादशी पर व्रत रखना और अपने नाम के साथ जाति लगाना भी दण्डनीय था।

हिन्दुओं को अनिवार्यतः ईसाई पादरियों के प्रवचन सुनने पड़ते थे। हिन्दुओं को घोड़े पर बैठने की अनुमति नहीं थी। ईसाई बनने पर जमीन का लगान माफ कर दिया जाता था। हिन्दू होने पर अपमान, दण्ड और मृत्युभय था।

‘इन्क्वीजीशन’ के अन्तर्गत मृत्युदण्ड देने के ढंग थे। जिनमें क्रास पर बाँध कर जीवित जलाना, सिर काट लेना आदि सामान्य था। एक दिन में ६ हजार लोगों के सिर कटने पर जेवियर ने सन्तोष व्यक्त किया था और १५४२ में कहा- जब सब क्रिश्चियन बन जायेंगे, तब झूठे देवताओं के मन्दिर नष्ट किये जायेंगे, तब मेरी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं होगी। (सेन्ट जेवियर्स- ए० मेन एण्ड हिज मिशन से) हजारों व्यक्तियों की हत्या, हजारों महिलाओं को क्रास से बाँध कर जिन्दा जला दिया गया। विश्व का जघन्यतम हत्याकाण्ड और अत्याचार का यह क्रम १८१२ तक गोवा में जारी रहा।

पंथ न्यायाधिकरण (Inquisition) की न्याय प्रक्रिया

पंथ के नाम पर न्याय का ढोंग कर मत-परिवर्तन को जबरन थोपने के चर्च के क्रूर-हथकण्डे का नाम था ‘इन्क्वीजीशन’, जिसके लिए एक प्रक्रिया भी चर्च ने निश्चित की थी।

सर्वप्रथम अभियुक्त को न्यायाधिकरण के सम्मुख आरोप स्वीकार न करने पर, उसको प्रताड़ना कक्ष (टार्चर रूम) में ले जाने का आदेश सुनाया जाता था।

वहाँ उपस्थित ‘नोटरी’, जो न्यायाधिकरण की कार्यवाही लिखता था, अभियुक्त को सूचित करता था कि प्रताड़ना के इस क्रम में यदि वह मर जाता है, उसके हाथ-पैर या कोई अंग क्षतिग्रस्त या नष्ट हो जाता है, अथवा वह चेतना-शून्य हो जाता है, तो यह उसकी स्वयं की जिम्मेदारी होगी। यदि वह इस स्थिति से बचना चाहता है, तो आरोप स्वीकार कर ले।

कुछ तरीके प्रताड़ित करने के

- आरोप स्वीकार न करने पर प्रताड़ना प्रारम्भ की जाती थी। सर्वप्रथम दोनों हाथ पीछे कलाई से बाँधकर इस प्रकार ऊपर टाँगना कि उसके पैर जमीन से ऊपर उठे रहें और कुछ-कुछ क्षण बाद झटका देते रहना।
- बाँस की सीढ़ी (टिकटी) पर अभियुक्त को बाँधकर इस प्रकार पानी के कुण्ड पर बाँधना कि बार-बार पानी में सिर डुबाया जा सके।
- हाथ-पाँव की नसें काटना।
- हाथ-पाँव साथ-साथ बाँध कर लटकाना।
- मुँह में लोहा डालकर मुँह खुले रखना और रुई के टुकड़ों में मिला पानी डालना जिससे श्वास रुक जाये।
- यन्त्रणा देने के यन्त्र भी विकसित किये गये थे जैसे- थम्ब स्कू, लैग क्रशर, स्पेनिश वूट।
- उबलते तेल में हाथ-पैर डालकर जलाना।
- जलते हुए गन्धक से जलाना।
- हाथ-पैर बाँधकर मोमबत्ती से लगातार मांस जलाना।
- गले में मछली डालकर ऊपर से पानी न पीने देना न उल्टी करने देना।
- चक्कर वाली कुर्सी पर बेहोश होने तक गोल घुमाना।
- उँगली से लम्बे काँटों वाली कुर्सी पर निर्वस्त्र बैठाना।
- पीछे की ओर मोड़कर रीढ़ की हड्डी तोड़ना।
- धर्मभ्रष्ट करने के लिए जबरिया गाय या सूअर का मांस खिलाना।

ऐसे अनेकों अत्याचारों का वर्णन है।

सामान्यतः दस में से ६ निर्दोष बन्दी तो इन क्रूर अत्याचारों के कारण ही बिना अपराध स्वीकार करे मर जाते थे। स्त्रियों को भी इसी प्रकार के दण्ड देने का विधान था।

- न्यायाधिकरण में न्यायाधीश के अतिरिक्त जो दो अन्य व्यक्ति नियुक्त होते थे, वे भी चर्च के प्रतिनिधि होते थे।
- अभियुक्त ही नहीं गवाहों को भी गवाही देने के लिए इसी प्रकार प्रताड़ित कर गवाही दिलायी जा सकती थी।

संदर्भ— Inquisition in Goa by A.R. Pirolkar

१९वीं शताब्दी में भारत में ईसाइयत का विस्तार

- १८१३ में मिशनरी समर्थकों द्वारा इंग्लैण्ड में 'चार्टर ऐक्ट' पारित कर, भारत में ईसाइयत के प्रचार का वैधानिक अधिकार प्राप्त और कलकत्ता में बिशप नियुक्त किया १८३३ में और मद्रास में भी बिशप नियुक्त किये गये, साथ ही पादरियों के भारत प्रवेश पर दिया जाने वाला लाइसेन्स समाप्त कर दिया गया।
- १८३३-१८५३ तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन में इंग्लैण्ड की चर्च समर्थक लॉबी के द्वारा गैर ईसाइयों को ईसाई बनाने के लिए और अधिक दबाव बनाया जाता रहा। इसी काल में ईसाई पादरियों का रवैया भारतीय समाज के साथ-साथ भारतीय सैनिकों के प्रति भी जबरदस्ती ईसाईकरण का था। प्रसिद्ध इतिहासकार आर०सी० मजूमदार ने लिखा है- "सिपाहियों की सामाजिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों में पादरियों के हस्तक्षेप पर कोई रोक-टोक नहीं थी। पादरी देवी-देवताओं के विरुद्ध हिंसक और अश्लील गाली-गलौज का व्यवहार करते थे।" १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख कारण अपनी धार्मिक आस्थाओं की सुरक्षा था।

ईसाई पादरियों को शासन का सहयोग प्राप्त होता रहा था—

- ३ नवम्बर १८७६ को भारत सरकार ने ईसाईकरण के लिए हिन्दुओं के विरोध के बावजूद Ecclesiastical Department प्रारम्भ किया। इसके अन्तर्गत किसी भी एक स्थान पर या रेलवे स्टेशन पर रहने वाले इंग्लैण्ड में जन्मे २५ ईसाइयों को चर्च बनाने के लिए आर्थिक सहायता दी जाती थी और इस कार्य के लिए अलग से बजट पास किया जाता था। सेना में कार्यरत ईसाइयों के लिए भी इस प्रकार की सुविधा दी गयी। यह व्यवस्था ईसाइयों के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बियों के लिए नहीं थी। (Imperial Policy of British in India (1876-1880) Page 360 by V.C.P. Chawdhary)
- १९वीं शती के उत्तरार्ध में अंग्रेजी राज्य की नीतियों के कारण फैले अकाल का पादरियों ने ईसाईकरण के लिए उपयोग किया। लाखों भारतीय अक्तूबर १८७७ से मार्च १८७८ के बीच ईसाई बने, यह कैथोलिक चर्च के अधिकारियों ने स्वीकार किया।
- भूख से बिलखते बच्चे इस विपत्ति का मुख्य शिकार बनकर ईसाई बनाये गये, केवल मद्रास में इस कालखण्ड में १४ हजार भूख से मरते लोगों को ईसाई बनाया गया।

उपर्युक्त (वी०सी०पी० चौधरी पेज-३५४)

इसी का परिणाम था कि १८८२ से १९०१ तक २० वर्ष में भारत में ईसाई जनसंख्या दुगुनी हो गयी।

भारत को गुलाम बनाया- ईसाइयत के सहारे

अंग्रेजों से हुए युद्ध में बंगाल के नवाब मीर कासिम की सेना के २०० ईसाई सैनिक, जो तोपखाने में थे, ५ जुलाई १७६३ को अंग्रेजों से जा मिले। कलकत्ते के खोजा ग्रिगरी (जो ईसाई बन गया था) ने अंग्रेजी मेजर एडम्स को सारे भेद बताये। ४ सितम्बर को हुए निर्णायक युद्ध में एक अंग्रेज सिपाही, जो कम्पनी की नौकरी छोड़ कर नवाब की सेना में भर्ती हुआ था, उसने अन्य ईसाई सैनिकों के साथ षड्यन्त्र द्वारा अंग्रेजी सेना को किले में बुला लिया। इस युद्ध में नवाब के १५ हजार सैनिक मारे गये। अंग्रेजी सेना के लिए इस ईसाई सैनिक ने मौके पर ईश्वर का सा काम किया।

History of Bengal Army-by-Broome-Page 157

- मैसूर के हैदरअली ने अपनी सेना में कुछ फ्रान्सीसी अफसर नियुक्त किये थे। उन्होंने इंजील और सलीब हाथ में लेकर वफादारी की कसम खायी थी। १७६८ में जब अंग्रेज जनरल स्मिथ और कर्नल वुड की संयुक्त सेनाओं से हैदर अली का युद्ध चल रहा था- तब ईसाई पादरियों का यह फतवा इन यूरोपीय सैनिकों में बाँटा गया- “जो कसमें इंजील और सलीब को लेकर भी मुसलमानों के सामने खायी जायें, ईसाई उनका पालन करने के लिए बाध्य नहीं है।”

फतवे पर हस्ताक्षर करने वाले वही पादरी थे, जिनको हैदर अली ने अनेक रियायतें दे रखी थीं। मंगलौर पर हमले के समय वे तीनों चर्च के प्रमुख पादरियों ने हैदर के विरुद्ध शत्रुओं की मदद की थी। (भारत में अंग्रेजी राज-ले. सुन्दर लाल, पृ. २१-२७३)

ग्वालियर के राजा दौलतराव सिंधिया ने अपनी सेना में यूरोपीयन अफसर नियुक्त किये थे, जो युद्ध के समय पादरी के फतवे के कारण अंग्रेजों से मिल गये थे। एक प्रमुख ईसाई अफसर ‘जीन बैप्टिस्ट फिलासे’ ने १.५ लाख रु. अंग्रेजों से लेकर सिंधिया के साथ विश्वासघात किया। उसने भरतपुर की सहायता के लिए जाने वाली घुड़सवार सेना को धोखा देकर रोक रखा था। (जनरल लेक का वेलेजली को व्यक्तिगत पत्र- आगरा, २२ सितम्बर १८०४)

लार्ड विलियम बैंटिंक ने ऐबेदूबाय नामक फ्रांसीसी पादरी को ८ हजार रु. नकद देकर भारतीयों के धार्मिक व सामाजिक रीति-रिवाजों पर एक झूठ से भरी पुस्तक लिखवायी, जिसमें भारतीयों को जंगली बताकर उनके उद्धार के लिए अंग्रेजी राज्य आवश्यक बताया है। (एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका ११वाँ संस्करण, Vol. ८ पृ. ६२४)

देश की पराधीनता को कायम रखने और बढ़ाने के लिए देशी सिपाहियों का उपयोग किया, उसी कपटी शासन के जरिये भारतवासियों को ईसाई बनने का उपयोग किया गया।

(हरबर्ट स्पेन्सर)

क्या केवल ईसाई संगठन सेवा के कार्य करते हैं ?

हिन्दू समाज सदैव मानवता की सेवा में तत्पर रहा है। आज भी अनेक संस्थाओं, संगठनों और व्यक्तिगत स्तर पर भी सेवा में जुटे हैं।

- विद्या भारती- देश में १५ हजार से अधिक विद्यालय, नगरों, ग्रामों और सुदूर अंचलों में भी चला रही है, जिसमें ७४ हजार अध्यापक और २० लाख छात्र हैं। छोटे-छोटे वनवासी गाँवों में 'एक अध्यापक- एक स्कूल' योजना के अन्तर्गत २००० से अधिक विद्यालय।
- सेवा भारती-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से १७ हजार से अधिक शिक्षा, चिकित्सा, संस्कार, स्वावलम्बन प्रशिक्षण के प्रकल्प शहरी गरीब बस्तियों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में चलाती हैं। इसमें ५० हजार से अधिक स्वयंसेवक जुटे हैं और ५० लाख से अधिक समाज बन्धु लाभान्वित होते हैं।
- वनवासी कल्याण आश्रम- वनवासी क्षेत्र में १० हजार से अधिक प्रकल्पों द्वारा देश के लगभग ५० हजार वनवासी ग्रामों में सेवा कार्य हो रहे हैं, जिनमें १२५० से अधिक पूर्णकालिक स्वयंसेवक स्त्री, पुरुष लगे हैं।
- विश्व हिन्दू परिषद- सारे देश में १५०० से अधिक सेवा कार्य चलाती है। १९६२ में बाबरी ढाँचा गिरने के बाद लगे प्रतिबन्ध की सुनवायी करने वाले आयोग ने भी विहिप के सेवा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

इसके अतिरिक्त आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, सत्य साईं मिशन, चिन्मय मिशन, विवेकानन्द केन्द्र, युग निर्माण योजना, भारत विकास परिषद, भारतीय कुष्ठ निवारक संघ, पाण्डुरंग शास्त्री आठवले द्वारा संचालित स्वाध्याय, तिरुपति देवस्थानम् वैष्णो देवी ट्रस्ट, आदिम जाति सेवक संघ, दीनदयाल शोध संस्थान आदि अनेकानेक लोक कल्याणकारी संस्थाएँ समाज में कार्यरत हैं।

१९६३ में विद्रोही नागा गुटों की ओर से बैपटिस्ट चर्च के एक पादरी रैव. स्कॉट ने भारत सरकार से मध्यस्थता का प्रस्ताव किया; परन्तु जब उसने वार्ता का प्रारम्भ यह कह कर किया कि- "नागा भारतीय नहीं हैं, क्योंकि वे ईसाई हो चुके हैं" तब मजबूरन भारत सरकार को उसे ४८ घंटे में देश से बाहर निकालना पड़ा।

नारी के प्रति ईसाइयत की दृष्टि

ईसा के प्रमुख शिष्य सेन्ट पॉल के अनुसार- 'स्त्री' का निर्माण मूल योजना में था ही नहीं- यह ऑफ्टर थाट है। 'नारी' का निर्माण ही पुरुष के मनोरंजन के लिए हुआ है।

-ईसाईमत के अनुसार ईव (हव्वा) के कारण ही स्वर्ग से आदम को निकालना पड़ा, इसीलिए ईविल (पाप) का जन्म 'ईव' से हुआ।

- ५८५ ई. में मैकन में ८५ बिशप एक सभा में विचार करते हैं- "क्या स्त्रियों में भी आत्मा है ? लगभग १५० वर्ष तक ईसाई पादरी चर्चा करके इस निष्कर्ष पर पहुँचे- "ईसाई स्त्री दुष्ट है और गैर ईसाई स्त्री को मानव मानना अधार्मिक और शैतानी कृत्य होगा।
(डिक्शनरियो फायोडल.पृ. ५६)।
- जनगणना में 'नारी' की गणना नहीं की जाती थी, क्योंकि वह मानव नहीं थी। न वह सम्पत्ति की अधिकारिणी थी, न विश्वविद्यालय से 'डिग्री' प्राप्त करने की, न वकालत का लाइसेन्स प्राप्त करने योग्य ही।
- पहली बार १६२६ में 'लन्दन' की प्रीवी काउन्सिल ने अनुमति दी कि 'नारी' को भी मनुष्य माना जा सकता है।
- १३वीं शताब्दी में पोप इन्नोसेन्ट तृतीय के समय में 'चर्च' के पादरियों के लिए 'सेलेबेसी' (कुंवारे रहने का) का नियम बना, जिसके अन्तर्गत शरीर, कामभावना और विवाह तीनों ही दूषित घोषित कर दिये। इसलिए विवाह विजित हुआ; परन्तु अनिर्बन्ध काम-भोग को खुली छूट मिल गयी।
- सेलेबेसी का अर्थ हिन्दू समाज में वर्णित 'ब्रह्मचर्य' नहीं है जिसमें 'इन्द्रिय निग्रह' का विचार हो। इसमें विवाह का निषेध किन्तु वेश्यागमन की छूट थी। पादरी, बिशप या क्लर्जी को एक या अधिक वेश्या या रखैल रखना अनिवार्य था। चर्च ने अपने पादरियों के लिए वेश्यालय खुलवाये और उनकी व्यवस्था के लिए पादरी अपने चर्च के अनुयायियों से 'वेश्या कर' वसूल करते थे।
(स्त्री प्रश्न- ले. डा. कुसुमलता केडिया, पृ. ५८)
- चरित्र का स्तर ऐसा था कि सेलीबेसी धारण करने वाले पादरी के अपनी माता-बहनों से भी काम सम्बन्ध थे, इसलिए राज्य को नियम बनाना पड़ा कि सेलिबेट पादरी के निकट उसकी माँ या बहिन को अकेले न जाने दिया जाय।

-हिस्ट्री ऑफ दी पोप- ले. डा. कारमेनिन, पृ. ६२

- पति द्वारा प्रताड़ित महिला को माता-पिता के द्वारा संरक्षण देना चर्च के विरुद्ध अपराध था।

ईसाइयत का बर्बर चेहरा

नारी का उत्पीड़न और दमन ईसाई मानस में बाइबिल की मूल कथा ने पैठा दिया है। मध्यकाल में शैतान की प्रेमिका डायन (Witch) को सभी गलतियों के लिए जिम्मेदार मानकर मृत्युदण्ड देना अनिवार्य कर दिया गया था। किसी भी आयु और वर्ग की किसी भी नारी को चर्च द्वारा डायन घोषित करने का अधिकार और उसके बाद उसको दी जाने वाली क्रूर यंत्रणाओं का वर्णन अनेक ईसाई ग्रन्थों में दिया है।

नग्न करके कोड़े लगाने, पीड़ादायक यंत्रों से अंग-अंग को धीरे-धीरे तोड़ने, पानी में उल्टा लटकाना, सारे शरीर में पिन चुभाना, से लेकर जिन्दा जला देने, उबाल कर मारने जैसे वीभत्स ६०० प्रकार के दण्ड (चर्च द्वारा चुड़ैल घोषित स्त्रियों) के लिए निश्चित थे। दण्डित की गयी इन अभ्यागिनों को चर्च द्वारा दण्ड देने का शुल्क भी तय था, जो इनके परिवी जनों को चर्च को देना पड़ता था। चर्च के अधिकृत रिकार्ड में इसका विस्तृत वर्णन है उदाहरणार्थ- पेरिस में महिला को तेल में उबालने की फीस ४८ फ्रैंक, चक्के पर शरीर तोड़ने के १० फ्रैंक, घोड़े द्वारा शरीर के चार टुकड़े करवाने के ३० फ्रैंक, जिन्दा जमीन में गाड़ने के मात्र २ फ्रैंक, नाक, कान या जीभ काटने के १० फ्रैंक, गर्म लोहे की सलाख से दागने के १० फ्रैंक।

संदर्भ- वूमैन, चर्च एण्ड स्टेट-मटिल्डा जोसलिन रोज पृ. २६७

- चर्च के उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर १४८४ से १७८४ तक ३०० वर्षों में यूरोप में ६०,००,००० (नब्बे लाख) स्त्रियों को चुड़ैल घोषित कर मृत्युदण्ड दिया गया।
- चुड़ैलगीरी (विच क्राफ्ट) के मुकदमों से चर्च का खजाना भरा जाता था। क्योंकि जिस परिवार में एक भी चुड़ैल पायी गयी, उसकी सम्पत्ति चर्च को ही जाती थी।

- उपर्युक्त- पृ. २४६

इंग्लेण्ड में 'पैगन' मत सबसे तेजी से बढ़ रहा है। वर्तमान में उसके १ लाख से अधिक अनुयायी हैं, जो मुख्यतः ग्रामीण और श्रमिक वर्ग से जुड़े हैं। प्रकृति को मूर्ति रूप में तथा ईश्वर को स्त्री और पुरुष दोनों में स्वीकार करना इस मत का प्रमुख सिद्धान्त है।

'Sunday Times' London- 3, Nov. 1999

नरक की फरिश्ता (हेल्स ऐंजिल)

यह शीर्षक है बी.बी.सी. लंदन से प्रसारित होने वाले एक वृत्तचित्र का। यह फिल्म कलकत्ता की ईसाई प्रचारिका एग्नेस उर्फ टेरेसा (मदर टेरेसा) के विषय में प्रसिद्ध फिल्म निर्माता क्रिस्टोफर डिचेन्स द्वारा उसकी सेवा का चित्रण है।

‘करुणा की मूर्ति’ की छवि वाली टेरेसा के द्वारा चलने वाले कलकत्ता में मरणासन्न रोगियों के केन्द्र में लम्बे समय से वहाँ रह रही मेरी लुडन बताती हैं कि यहाँ कोई चिकित्सा नहीं दी जाती। मरने की प्रतीक्षा में अधिक से अधिक एस्प्रिन जैसी दर्द निवारक गोली मिलती है। फिल्म बताती है कि मदर टेरेसा का ‘वेदना और मृत्यु का सम्प्रदाय’ सबसे कमजोर और असहाय लोगों पर निर्भर है। लावारिस छोड़ दिये गये बच्चों या मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे बीमार मदर टेरेसा को अपना करुणा के प्रचार के लिए आवश्यक कच्चा माल प्रदान करते हैं। आगे की कहानी में १५ वर्षीय किशोर को डाक्टर के कहने पर भी मदर टेरेसा अस्पताल नहीं भेज रही हैं; क्योंकि यदि वह अस्पताल जायेगा तो अन्य बीमार भी यहाँ से बाहर इलाज के लिए जाना चाहेंगे।

जालसाजों की सहयोगी

अमेरिका के इतिहास में सबसे बड़ा जालसाजी कांड करने वाला चार्ल्स कीटिंग (लिंकन सेविंग एण्ड लोन कं. के अध्यक्ष) से ५ लाख डालर और उसके निजी जहाज की सुविधा लेकर उन्होंने उसको अपना निजी सलीब भेंट किया। जालसाज को सज्जन बताने वाली मदर टेरेसा हैं। (इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध समाचार पत्र गार्जियन साप्ता. १३ नवम्बर १९९३)

मदर टेरेसा का एकमात्र व्यापार है कि वह लाशों पर प्रार्थना करती हैं, न कि जिन्दा लोगों की जिन्दगी सँवारती हैं। (फ्रांस के द लांसेट का सम्पादकीय)

कुष्ठ निवारण या पंथ निवारण

लखनऊ से २४ किमी दूर लखनऊ-रायबरेली मार्ग स्थित कस्बा मोहनलाल गंज में १९७५ में मदर टेरेसा के प्रयास से स्थापित लैप्रोसी मिशन ऑफ चैरिटी का ज्योति नगर कुष्ठ निवारण व पुनर्वास केन्द्र है। १९९५ तक यहाँ ४०० रोगी थे। विदेशी धन के साथ-साथ उ. प्र. की सरकार भी वार्षिक सहयोग करती थी। यहाँ के अस्पताल में कभी भी डाक्टर की नियुक्ति नहीं की गई। कुष्ठ रोगी खेत पर श्रम करते, बदले में प्रतिमाह १० किग्रा. अन्न प्राप्त करते थे।

यहाँ के रोगियों को विशेष सुविधा प्राप्त करने के लिए ईसाई बनना और उसके लिए गो मांस खाना मजबूरी थी। (जीवन, निर्मल और शंकर नामक रोगियों को गो मांस खिलवाया गया।) परन्तु श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को अपने पुराने संस्कारों के वशीभूत होकर कीर्तन प्रारम्भ करने वाले ४० परिवारों को केन्द्र से बाहर निकाल दिया गया। अन्य २४ परिवार भी अक्टूबर ८५ में पुलिस द्वारा निकलवा दिये गये। उनका अपराध था कि दीपावली की रात्रि में उन्होंने कोठरी में छिप कर दीपक जलाया था।

मदर टेरेसा से भेंट करने गयी कु. कुमुद किशोरी राय को जबरन ईसाई बनाने के लिए भयंकर प्रताड़ना दी गयी।

संदर्भ : वेटिकन, टेरेसा, सोनिया, लेखक, ब्रह्मदत्त भारती, पृ. १०-११

वियतनाम में धोखाधड़ी से धर्मान्तरण के आरोप में 'सिस्टर ऑफ चैरिटी' को वियतनाम सरकार ने बन्द करा कर नन्स को देश से निकाल दिया। - स्टेट्समैन- १६.३.१९६६

क्या ईसाई समाज में जातीय भेदभाव नहीं है ?

चर्च में जातीय भेदभाव के उदाहरण आज भी देखने को मिलते हैं। दलितों और गैर दलितों के लिए अलग-अलग गिरजाघर बनाए गये हैं, जहाँ पर केवल एक गिरजाघर है, वहाँ पर दलितों और गैरदलितों के लिए बैठने के स्थान अलग-अलग हैं। दलित वर्ग के बन्धुओं को गिरजाघर में दोनों किनारों पर बैठाया जाता है। अगर वहाँ बैठने के लिए कुर्सियाँ या बेंचें हैं, तो दलितों को जमीन पर बैठाया जाता है। प्रभु भोज में भी आमने-सामने अलग-अलग कतार लगती है।

आजीवन तो ये ईसाई जाति भेद का शिकार बने ही रहते हैं, मरने के बाद भी जाति भेद इनका पीछा नहीं छोड़ता, दोनों के लिए अलग-अलग कब्रिस्तान है।

तमिलनाडु में जहाँ ८० प्रतिशत ईसाई दलित हैं। जिनमें से केवल ३ प्रतिशत ही शिक्षण संस्थाओं में हैं। तमिलनाडु में १४ बिशप है, जिसमें केवल एक ही दलित है। इतना ही नहीं, भारत मैसी के अनुसार उत्तरी भारत में ३२ बिशप हैं, जिनमें से केवल एक राँची का बिशप आदिवासी है।

- | | |
|---------------|-----------------------------------|
| संदर्भ पुस्तक | - दलित दृष्टिकोण से बाइबिल अध्ययन |
| लेखक | - एन्टोनी जॉन व नयन कोशी |
| प्रकाशक | - लखनऊ पब्लिशिंग हाउस |

ईसा के नाम पर जनता को धोखा

गत १६ अक्टूबर १९६६ को पश्चिम त्रिपुरा जिले के बेहलवारी क्षेत्र के खोवाई ग्राम में स्थित जितेन अखरा बैपटिस्ट चर्च की ओर से एक अफवाह वनवासी समाज में फैलायी गयी कि- 'जीसस क्राइस्ट' प्रकट होंगे और रोगियों को रोगमुक्त करेंगे।

हजारों की संख्या में एकत्र हुए वनवासी दो दिन तक ईसा की प्रतीक्षा करते रहे। धैर्य समाप्त होने पर भीड़ उत्तेजित होने लगी, पादरी के व्यवहार ने आग पर घी का काम किया। भीड़ ने चर्च में तोड़-फोड़ की।

पादरी सुभाष देव वर्मा आयु ४० वर्ष, जो उक्त चर्च का पोस्टर है, अपने पिता को भी जबरदस्ती ईसाई घोषित किया था। उसके पिता वैष्णव मतानुयायी थे, उनके अखरा (वैष्णव आश्रम या अखाड़ा का अपभ्रंश) को बैपटिस्ट चर्च वालों ने जबरदस्ती कब्जा कर लिया था। क्रुद्ध भीड़ के भय से पादरी ने राधाकृष्ण की वह मूर्ति, जो उसने अखरा से उठाकर तालाब में फेंक दी थी, खोज कर वापिस कर दी।

भोले वनवासियों के साथ धोखाधड़ी

उड़ीसा के मयूरभंज जिला के लगतकमला गाँव के गौमेया का परिवार, जो ईसाई बना है, उसने बताया- सात साल पहले मुझे बुखार आया। उसी समय ठाकुरमुण्डा गाँव के दो व्यक्ति आये और उन्होंने कहा, तुम इस तरह क्यों कष्ट भोग रहे हो ? ईसाई बन जाओ, सब ठीक हो जायेगा।

मयूरभंज जिले में ऐसे ग्रामोफोन रिकार्ड, जो हाथ से घुमाने पर चलते हैं, वनवासियों में बाँटे जा रहे हैं। चलाने पर उसमें से आवाज आती है- भय त्याग दो, ईसा तुम्हें पुकार रहा है। आस-पास बैठकर सुनने वाले भोले वनवासियों को यह आकाशवाणी की तरह लगती है, और वे इसके भय से ईसाईकरण के चंगुल में फँस जाते हैं।

(आउट लुक- २० सितम्बर, १९६६)

- अमेरिका में धार्मिक भेदभाव एक बड़ी समस्या है। वहाँ का प्रशासनिक तन्त्र भी इसमें शामिल होता है। १९६७ में फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (भारत की सी०बी०आई० के समान जाँच संस्था) में १४०० भेदभाव के मामले जाँच के लिए आये।

मतान्तरण के लिए चर्च के हथकंडे

चिकित्सालय : मानव सेवा नहीं धर्मान्तरण का अस्त्र

अनेक स्थानों ईसाई चिकित्सालयों में चिकित्सक वहीं सुश्री डा. हंसा जयकुमार ने अपनी पुस्तक में स्वीकार किया है- देश के अनेक भागों में चल रहे सैकड़ों मिशन अस्पताल एक ही उद्देश्य से चल रहे हैं वह है सभी भाषा और वर्ग के लोगों तक ईसा का संदेश पहुँचाना। यह अधिक शक्तिशाली हथियार है जो सामूहिक धर्मान्तरण में प्रभावी है। मानवता की सेवा में चलने का बहाना लिए इन अस्पतालों में यह निर्देश है कि उन मरीजों की चिंता मत करो, जिनके मतान्तरण की संभावना नहीं है।

मिशन स्कूल

मतान्तरण के सबसे प्रभावी साधन हैं विशेषकर वे विद्यालय, जहाँ बच्चों को मातृभाषा में बोलना दंडनीय अपराध है।

मिशनरी डब्ल्यू. जे.विकेन्स अपनी पुस्तक 'डेली लाइफ एंड वर्क इन इंडिया' में लिखते हैं- यदि इन लोगों का विश्वास ईश्वरीय पुस्तकों (वेदों) से नष्ट किया जा सके तो हम आशा कर सकते हैं कि वे ईसाइयत को सम्मानपूर्वक सुनेंगे और इसी उद्देश्य से मिशन स्कूल खोले गये हैं।

“प्रत्येक मिशनरी जानता है कि भारत में मिशन स्कूलों का एक विशेष उद्देश्य है। इतना ही नहीं, उसे मन से स्पष्ट समझना चाहिए कि भारत में मिशन स्कूलों का उद्देश्य लड़के-लड़कियों को ईसाइयत की शरण में ले जाना है।” (क्रिश्चियनिटी इन चेंजिंग इंडिया- ले. क्लिफोर्ड मेंन्सार्ट)

महान् दार्शनिक व पूर्व राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन ने इस सच्चाई को जाना था। उन्होंने लिखा है कि, जब मैं मिशन स्कूल में पढ़ता था तो किस प्रकार मिशन स्कूल के अध्यापक मेरे धर्माचार्यों एवं धर्म के प्रति घृणा व्यक्त करते थे। ('सत्य की खोज', पृष्ठ १)



कैथोलिक शिक्षण संस्थाओं की वर्तमान स्थिति के बारे में लगभग ५० प्रतिशत लोगों का कहना है कि ये संस्थाएँ, व्यावसायिक संगठन बन गयी हैं। और इन संस्थाओं में गरीब ईसाइयों के बच्चों को प्रवेश नहीं मिलता।

ईसाई शैक्षणिक संगठनों का सर्वेक्षण : 'रीनिवल-२०००'
ए सर्वे ऑफ द आर्च डीओसेज ऑफ दिल्ली १९९७ की रपट

साम्राज्यवाद की रक्षा के लिए- अंग्रेजी में शिक्षा

भारत के अन्दर अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी साहित्य को फैलाने और उसे उन्नति देने का लार्ड विलियम बैंटिंक का कानून- भारत के अन्दर अंग्रेजी राज के अब तक के इतिहास में कुशल राजनीति की सबसे जबरदस्त चाल मानी जायेगी।

- डा. डफ लार्ड्स कमेटी की दूसरी रपट

- Indian Territories 1953, Page 409

अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव अंग्रेजी राज के लिए हितकर हुए बिना नहीं रह सकता। जो भारतीय युवक हमारे साहित्य द्वारा हमसे भली-भाँति परिचित हो जाते हैं, वे हमें विदेशी समझना प्रायः बन्द कर देते हैं।हमारी जैसी शिक्षा, हमारी ही जैसी रुचि और हमारे जैसे रहन-सहन के कारण इन लोगों में हिन्दुस्तानियत कम हो जाती है और अंग्रेजियत अधिक आ जाती है।फिर बजाय इसके कि वे हमारे तीव्र विरोधी हों, वे हमारे जोशीले और चतुर मददगार बन जाते हैं।फिर वे हमें अपने देश से बाहर निकालने के उग्र उपाय सोचना बन्द कर देते हैं।

- सर चार्ल्स ट्रेवेलियन

(A paper of the political tendency of the different systems of education in use India, submitted to parliamentary committee of 1853.)

आज भी चर्च द्वारा संचालित विद्यालय अपनी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाकर उन्हीं साम्राज्यवादी शक्तियों की सहायता करने में लगे हैं।

श्री चन्दन पाठक ने लोकसभा में प्रश्न पूछा- क्या उत्तर-पूर्व के मेघालय, नागालैण्ड, मिजोरम में सक्रिय आतंकवादी विदेशों से हथियार, गोला-बारूद खरीदने में विदेशी मिशनरियों से आर्थिक सहायता पाते हैं ? यदि हाँ, तो सरकार ने उनकी इन गतिविधियों को रोकने के लिए क्या किया है ?

१० दिसम्बर १९६६ को तत्कालीन गृहराज्यमंत्री मकबूल दर ने उत्तर दिया- उत्तर-पूर्व के कुछ विद्रोही गुट कुछ अन्तर्राष्ट्रीय चर्च संगठनों द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त करते हैं और इसका हथियार आदि खरीदने में उपयोग की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। उत्तर-पूर्व के कुछ आतंकवादी संगठनों को राजनैतिक स्तर पर भी आर्थिक सहायता दी जाती है। सरकार इन संगठनों पर नजर रखे है।

सेवा नहीं मतान्तरण ही

अकाल पीड़ितों को राहत बाँटने के साथ ही उनका मतान्तरण का अधिकार अमेरिकी ईसाई मिशनरियों को है, इस आशय का समझौता अमेरिका की सरकार ने भारत सरकार से किया है। यह रहस्योद्घाटन बिहार के पलामू के डिप्टी कमिश्नर के सम्मुख अमेरिकी ईसाई पादरी रैवरेण्ड जान बेली ने किया।

१९६६-६७ का साल बिहार का वनांचल क्षेत्र भयंकर अकाल से पीड़ित था। ऐसे समय में उपर्युक्त पादरी एक विदेशी सहायता समिति के साथ मिलकर अकाल-ग्रस्त क्षेत्र में सक्रिय था। बिहार के तत्कालीन राजस्व मंत्री श्री सिन्हा ने संवाददाताओं के सामने स्वीकार किया कि प्राप्त जानकारी के अनुसार अक्टूबर ६६ से जून ६७ के मध्य पलामू जिले में ३४२ व्यक्तियों को ईसाई बनाया गया। ये सेवा है या धर्म की तस्करी ?

(हिन्दुस्तान टाइम्स, दिल्ली २६/६/१९६७)

स्व. राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जब असम गये और वहाँ उन्होंने ईसाई मत प्रचारकों द्वारा स्थापित स्कूल और अस्पताल देखकर प्रसन्नता प्रगट की, साथ ही कहा- निःसंदेह तुमने बहुत अच्छा काम किया है, परन्तु इन चीजों को मतान्तरण के उद्देश्य के लिए उपयोग में मत लाना।”

पादरी ने राष्ट्रपति महोदय को उत्तर दिया- “यदि हम केवल मानवता के विचार से ही यह करने आये होते तो इतनी दूर क्यों आते ? इतना धन हम लोग क्यों व्यय करते ? हम तो यहाँ एक ही उद्देश्य से आये हैं, प्रभु ईसा के अनुयाइयों की वृद्धि करने।”

अक्टूबर में चेन्नई में आये तूफान का उदाहरण देते हुए चर्च द्वारा प्रकाशित पुस्तक में लिखा है- “हमने कुछ झोपड़ियाँ बनाई, उनके लिए कुँआ खुदवाया, उनको मुफ्त कपड़े और अनाज दिया। एक चर्च प्रार्थना के लिए और वहाँ एक पादरी की नियुक्ति की, जो उनकी देख-रेख करेगा। अनेक परिवारों ने इसके बाद ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। बीस से अधिक परिवारों का धर्म परिवर्तन कराया गया। जिस दिन यह बपतिस्मा हुआ, उसी दिन उस जगह का नाम ‘फ्रेंकलिन नगर’ किया था। (मिशन मेन्डेट- पृ. २५२)

जनवरी १९६६ में मध्य प्रदेश के अम्बिकापुर के मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी ने जूनाडीह (सरगुजा) के रोमन कैथोलिक मिशन के पादरी एल ब्रिकेट और नन बृद्धिद एक्का को छह-छह मास की कैद और ५००-५०० रु. जुर्माना सुनाया। उन पर १६ उर्ाँव वनवासी परिवारों के ६५ सदस्यों को जबरन ईसाई बनाने का आरोप सिद्ध हुआ था।

क्या ईसाइयत अन्य धर्मों के साथ वार्ता व सह-अस्तित्व में विश्वास रखती है ?

वेटिकन द्वारा घोषित वार्तालाप सिद्धान्त (Dialogue Theory) का उद्देश्य ईसाई मत को सेवा और प्रेम के लिए प्रचारित करना मात्र है, इसलिए कभी-कभी अपने लिए अनुकूल रहे, ऐसे व्यक्तियों को बुला कर वार्तालाप का नाटक रचाते हैं, जैसे पिछले दिनों पोप के आने पर दिल्ली विज्ञान भवन में हुआ था। सत्य बोलने वाले आलोचकों से वार्तालाप को चर्च नकार देता है जैसा कि विश्व हिन्दू परिषद जैसे संगठनों के प्रतिनिधि मंडल से पोप ने मिलने से मना कर दिया।

जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है, “सत्य तो यह है कि अपने पंथ के बाहर के सन्त महात्माओं को चर्च स्वीकार नहीं करता। नेहरू लिखते हैं- मैं यह याद करके आहत होता हूँ जब मुझे बताया गया कि १९३१ में लन्दन की गोलमेज कांग्रेस से वापिस लौटते महात्मा गांधी को रोम में पोप ने मिलने से मना कर दिया। यह इन्कार भारत के प्रति सुनियोजित अपमानजनक था। ऐसा सम्भवतः इसलिए हुआ; क्योंकि कुछ प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों ने महात्मा जी की प्रशंसा की थी और पोप को इससे अपने को अलग रखना आवश्यक लगा होगा।

- Mahatma Gandhi - लेखक जवाहरलाल नेहरू, सिग्नेट प्रेस, कलकत्ता, वर्ष १९४६

क्या भारत में ईसाई जनसंख्या घट रही है ?

भारत में ऐसे ईसाई, जो सरकारी जनगणना में अपना धर्म ‘ईसाई’ नहीं लिखाते, लेकिन चर्च में वे ईसाई के रूप में जाने जाते हैं, वे ‘सीक्रेट विलीवर’ माने जाते हैं और उनको सार्वजनिक तौर पर बाप्टिस्मा नहीं दिया जाता। इन क्रिस्टो क्रिश्चियनों की संख्या सार्वजनिक न करके चर्च धोखा देता है।

डा० डेविड डी बैरेट द्वारा सम्पादित और ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित ‘वर्ल्ड क्रिश्चियन एन्साइक्लोपीडिया’ के अनुसार- “भारत में सन् १९०० में १.७ प्रतिशत ईसाई थे, जो बढ़ कर १९७१ में ३.७ प्रतिशत १९८१ में ३.६ प्रतिशत और सन् २००० तक ४.७ प्रतिशत हो जायेंगे। १९७० से ८० के बीच १,७४,६७४ लोगों के धर्मान्तरण में सफलता पायी। (पृष्ठ- ३७०)

पैट्रिक जॉन स्टोन द्वारा लिखित और इंग्लैण्ड के ओम प्रकाशन (ओम-आपरेशन मोबलाइजेशन) से प्रकाशित प्रसिद्ध दस्तावेज ‘आपरेशन वर्ल्ड’ के अनुसार- “अधिकारिक रूप से भारत में ईसाई जनसंख्या २.६१ प्रतिशत है; परन्तु संभावित ४ प्रतिशत है। (पृष्ठ २६०)

विस्तार की ईसाई नीति

विश्व के ईसाईकरण के लिए गठित लाउसेन कमेटी की रपट

मतान्तरण के प्रभावी अस्त्र की खोज करने वाली ईसाइयत ने गैर ईसाई समूहों को क्षेत्र और समुदाय में बाँटकर विचार किया है।

- निजी लाभ-प्रेरक- भौतिक सुख-सुविधा देकर, हाशिये पर रह रहे समाज को हैसियत सुधारने का लालच देकर धर्मान्तरण कराया जा सकता है, यथा- उत्तर भारत के दलित।
- मनोवैज्ञानिक कारणों का ईसाइयत के प्रचार में उपयोग- प्रचण्ड मानसिक दबाव के समय आस-पास से प्राप्त ईसाई सहायता को उपलब्ध कराना। यथा- बीमारी के समय ईसाई डाक्टर-नर्स।
- अपने सांस्कृतिक परिवेश के कटे रहने के समय सामुदायिक जीवन से दूर अकेलापन अनुभव करने वाले समूह- जैसे- ग्रामीण विद्यार्थी नगरों में, एशियाई विद्यार्थी ब्रिटिश, अमेरिकी विश्वविद्यालयों में।
- जनसंख्या और सांस्कृतिक विचलन के समय- उदाहरण- क्यूबिया में पोलपोट के अत्याचारों से संतुष्ट जो शरणार्थी थाई-शिविरों में रह रहे थे बड़ी संख्या में ईसाई बने।
- बांग्ला देश में असुरक्षा के कारण ईसाई सहायता से चलनेवाले शिविरों में रह रहे हिन्दू 'नामशूद्र' और बौद्ध चकमा ईसाई बने। रपट में गहरा अफसोस जताया है कि बांग्लादेश के मुस्लिम परिवेश में ईसाई बनने वालों को सुरक्षा की गारण्टी न दे पाने के कारण काम आसान नहीं हुआ।
- श्रीलंका में हाल में ही हुए आबादी के विस्थापन से मतान्तरण का काम सरल हुआ।
- बांग्लादेश और पाकिस्तान में मिशनरियों को मुसलमानों के धर्मान्तरण की छूट नहीं, परन्तु हिन्दुओं के मतान्तरण की खुली छूट है।
- जब कोई देश आक्रमण का शिकार हो तब वहाँ राजनैतिक दमन होता है। उठापटक के उस दौर में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन गतिशील होते हैं, तब विजित लोगों का अपनी संस्कृति अपने इतिहास से श्रद्धा विश्वास उठ जाता है और वे आक्रामक के मजहब को चाहे-अनचाहे स्वीकार कर लेते हैं। उदाहरण- दक्षिण और मध्य अमेरिका, अफ्रीका और प्रशान्त द्वीप समूहों में, जहाँ ईसाई सैनिक और ईसाई पादरी मिलकर ईसाइयत फैलाते रहे।

मुक्ति का सिद्धान्त (Liberation Theology)

द्वितीय महायुद्ध के बाद बदली विश्व की परिस्थितियों का लाभ उठाने के लिए वर्ल्ड काउन्सिल ऑफ चर्चस (W.C.C.) ने यह एक नया नारा दिया। जिसके अनुसार दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, महिलाओं और आर्थिक दुर्बलों को उत्पीड़न से मुक्त कराने के नाम पर ईसा की शरण लाने के लिए चर्च हिंसा, नागरिक असहयोग, प्रतिरोधात्मक आन्दोलन तथा आन्तरिक उपद्रव का सहारा भी ले सकता है।

विभिन्न वर्गों को मुक्त करने के लिए विभिन्न नामों से संगठन खड़े कर, समाज को बाँटने के लिए चल रहे आन्दोलनों को चर्च वैचारिक आधार, आर्थिक सहायता और सक्रिय सहयोग देता है। ऐसे अनेक छोटे-बड़े चर्च प्रेरित आन्दोलन अपने चारों ओर देखे जा सकते हैं।

मतान्तरण परम्परागत संस्कृतियों का विनाश करता है ?

नागालैण्ड में ईसाई बन गये नागाओं ने परम्परागत गीत, नृत्य को छोड़कर पश्चिमी पाप संगीत व नृत्य को अपनी संस्कृति में अपना लिया है।

मिजोरम में परम्परागत मीजो रीति-रिवाज छोड़ रहे ईसाइयों के दबाव में १९८६ में राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल में हुए विधान सभा चुनावों में कांग्रेस के घोषणा-पत्र में कहा गया था कि मिजोरम में 'बाइबिल' के अनुसार शासन-व्यवस्था की जायेगी।

गांधीजी ने लिखा है कि सदाचारी वैष्णव ईसाई बनते ही मांस, मदिरा का सेवन करने लगता है।

क्या ईसाई बन जाने से जीवन स्तर सुधर जाता है ?

मतान्तरण के लिए सेवा कार्य वैसे ही प्रयोग किया जाता है जैसे मछली के काँटे में चारा, यह कथन है इवेन्जिलाइजेशन आर्मी के जनरल बूथ का। एक बार ईसाई बनने के बाद उसका जीवन स्तर सुधारना चर्च की जिम्मेदारी नहीं।

लगभग ४०० वर्ष पूर्व पूर्णतः ईसाई बन गया फिलीपाइन्स आज दक्षिण-पूर्व एशिया का सर्वाधिक गरीब देश है। भारत के लिए धन जुटाने वाली ईसाई संस्थाएँ वहाँ कोई सहायता नहीं करतीं। मध्य और दक्षिण अमेरिका के लैटिन अमेरिकी देश, जहाँ के निवासी गोरे ही हैं, ईसाई होने के बावजूद अति गरीब हैं। उत्तर अमेरिका के रेड इंडियन्स, जो अब पूर्णतः ईसाई बन चुके हैं, विश्व में सबसे गरीब हैं।

नियोगी कमीशन

(ईसाई मिशनरी गतिविधि जाँच समिति म०प्र०)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी विदेशी मिशनरियों की गतिविधियाँ बढ़ती ही गयीं और उनके विरुद्ध स्थानीय वनवासी समाज में भी आक्रोश फैलता गया। मिशनरी स्वतन्त्र भारत की निन्दा और ईसाई राज आने की घोषणा करने लगे। सरकार को टैक्स मत दो, सरकारी अधिकारियों को मार भगाओं के नारे और पृथक राज्यों की माँग, पादरी उठा रहे थे। गैर ईसाइयों के विरुद्ध विषवमन और उनकी सम्पत्ति को क्षति पहुँचायी जा रही थी। ऐसे समय में दोनों ओर से चल रहे आरोप-प्रत्यारोपों की खुली जाँच कराने का निर्णय तत्कालीन मध्य प्रदेश सरकार के कांग्रेसी मुख्यमंत्री पं० रविशंकर शुक्ल ने लिया।

१४ अप्रैल १९५५ को डॉ० भवानी शंकर नियोगी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, नागपुर उच्च न्यायालय की अध्यक्षता में गठित इस समिति में सभी पक्षों का समावेश किया गया। समिति के अन्य सदस्य थे म०प्र० विधानसभा के पूर्व स्पीकर श्री घनश्याम सिंह गुप्त, वर्धा कामर्स कालेज के प्रो० एस०के० जार्ज, श्री बी०पी० पाठक मन्त्री जन स्वास्थ्य विभाग, म०प्र०, सांसद श्री रतन लाल मालवीय (वर्धा) श्री भानुप्रताप सिंह, श्री गिरिराज सिंह देव आदि।

समिति ने जाँच के लिए १४ जिलों के सैकड़ों स्थानों पर जाकर ११३६० व्यक्तियों से पूछताछ की तथा बयान लिये। ७७ ईसाई केन्द्रों का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया। ३८५ लिखित वक्तव्यों, जिनमें से ५५ ईसाई संस्थाओं की ओर से थे, की जाँच-पड़ताल की।

अपने विरुद्ध प्रमाण जाते देख कर जाँच में सहयोग न करके कैथोलिक चर्च ने उच्च न्यायालय में 'मेन्डामस-पिटीशन' दायर करके, समिति की कार्यवाही स्थगित कराने का प्रयास किया, जिसे न्यायालय ने स्वीकार नहीं किया। अन्ततः १९५६ में १५०० पृष्ठों की रिपोर्ट समिति द्वारा जारी की गयी।

नियोगी समिति की प्रमुख संस्तुतियाँ

- मतान्तरण के उद्देश्य आये विदेशी मिशनरियों को बाहर निकालें। इनका प्रवेश देश के लिए अनिष्टकर है, इसको रोका जाये।
- भारतीय ईसाई विदेशी आश्रय छोड़कर, स्वतन्त्र संयुक्त भारतीय चर्च की स्थापना करें।
- चिकित्सा व अन्य सेवाओं के माध्यम से मतान्तरण को कानून बनाकर रोका जाये।
- माता-पिता/अभिभावकों की सुस्पष्ट अनुमति के बिना बच्चों को विद्यालयों में मजहबी शिक्षा न दी जाये।

- बल प्रयोग, लालच, धोखाधड़ी, अनुचित श्रद्धा, अनुभवहीनता, मानसिक दुर्बलता का उपयोग मतान्तरण के लिए न हो।
- मिशनरियों द्वारा कर्मचारी नियुक्ति और उद्योग-व्यवसाय स्थापना पर प्रतिबन्ध हो।
- मिशनरी संस्थाएँ व ईसाई समुदाय के प्रतिनिधि अपने मत प्रचार के लिए संविधान के उपयुक्त कार्यविधान को सरकार के सम्मुख प्रस्तुत करें।
- मत प्रचार का अधिकार केवल भारतीय प्रजा को है, विदेशी नागरिकों को नहीं।
- किसी भी निजी संस्था को विदेशी सहायता, सरकारी स्रोतों के अलावा प्राप्त करने की अनुमति न मिले।
- राजनीति में भाग नहीं लुंगा, ऐसा घोषणा पत्र दिये बिना किसी मत प्रचार करने वाली संस्था के सदस्य के रूप में काम करने की अनुमति न दी जाये।

रेगे जाँच समिति

उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री एम.बी. रेगे की अध्यक्षता में मध्य भारत की प्रान्तीय सरकार ने १३ मई १९५४ को एक समिति का गठन किया, जिसको ईसाई मिशनरियों द्वारा मतान्तरण की गतिविधियों में सम्मिलित होने तथा प्रशासन और विधि के विरुद्ध काम करने के आरोप की जाँच करनी थी-

रेगे कमेटी ने १९५६ में बताया-

- ईसाई मिशनरियों द्वारा सामूहिक मतान्तरण अवैध रूप से कराया गया है।
- मतान्तरण का मुख्य कारण अतिशय गरीबी, अशिक्षा और उपेक्षा है।
- मतान्तरण की प्रेरणा के लिए धन का लेनदेन एक सरल प्रकार है।
- यह सामान्यतः रोम कैथोलिक मिशन द्वारा किया जा रहा है, जो सरगूजा, रायगढ़ और मंडला में विशेष सक्रिय है।

न्यायमूर्ति वेणुगोपाल आयोग

१९८२ में तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में हुए भीषण दंगों के जाँच के लिए गठित आयोग ने स्पष्ट निष्कर्ष निकाले-

- ईसाई पादरियों द्वारा किया जा रहा मतान्तरण ही इन दंगों का मुख्य कारण है।
- आयोग ने सुझाव दिया, मतान्तरण को प्रतिबन्धित करने के लिए शीघ्र एक केन्द्रीय कानून बनाया जाय।

न्यायमूर्ति बाधवा आयोग

१९६८ में उड़ीसा के क्योँझार जिले के मनोहरपुर ग्राम में आस्ट्रेलियाई पादरी ग्राह्म स्टेन्स और उसके दो किशोर पुत्रों की जला कर की गयी हत्या की जाँच के लिए केन्द्र सरकार ने उच्चतम न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश बाधवा की अध्यक्षता में एक जाँच आयोग गठित किया। न्यायमूर्ति का चयन सरकार नहीं; वरन् उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने किया था। २१ जून १९६६ को इस आयोग की रपट प्रकाशित की गयी। कुछ प्रमुख निष्कर्ष-

- कोई भी हिन्दू संगठन इस हत्याकाण्ड की पृष्ठभूमि में है, इसका कोई भी प्रमाण नहीं है।
- कथित दारासिंह निजी तौर पर अपने कुकृत्य के लिए उत्तरदायी है।
- स्थानीय प्रशासन ने ईसाई और गैर ईसाइयों के बीच लम्बे समय से बढ़ रहे तनाव के प्रति सजगता नहीं दिखायी।

रपट आगे बताती है-

- मयूरगंज और क्योँझार जिलों में हुए ग्राम प्रधान के चुनाव में स्थानीय चर्च ने अपना प्रत्याशी खड़ा करके ईसाई मतावलम्बियों को उसको वोट देने को कहा। स्थानीय राजनीति में चर्च की दखलान्दगी से ईसाई-गैर ईसाई विवाद बढ़ा।
- रपट में उल्लेख है, पादरी स्टेन्स धर्म प्रचार और उक्त दोनों जिलों में चर्च की गतिविधियों में संलग्न था। चर्च के कृत्यों से स्थानीय जनजाति के लोग नाखुश थे। उसके काम के साथ जुड़े होने के कारण ही स्टेन्स घृणा का पात्र बन गया था।
- भारतीय संविधान अपने मत के पालन और प्रचार (Profess, practise and Propagate) की अनुमति देता है, परन्तु मतान्तरण (Conversion) की नहीं।
- मत के प्रचार का अधिकार भी केवल भारतीय नागरिक को है, विदेशी को नहीं।
- संविधान स्पष्ट कहता है, समाज की नैतिकता, कानून व्यवस्था, स्वास्थ्य के विपरीत प्रचार नहीं। परन्तु उड़ीसा में चर्च और उसके पादरी कानून भंग कर रहे हैं।

मतान्तरण के विरुद्ध कानून के प्रयास

- १९५४ में पहली लोकसभा में सर्वप्रथम श्री जेटालाल हरिकिशन द्वारा एक निजी विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत किया गया।
- १९६० में (द्वितीय लोकसभा) में श्री प्रकाश वीर शास्त्री द्वारा प्रस्तुत निजी विधेयक का तत्कालीन प्रमुख नेताओं- महावीर त्यागी, रणवीर सिंह, राम सुभग सिंह, सेठ गोविन्द दास, अटल बिहारी वाजपेयी, मणिबेन पटेल आदि ने समर्थन किया।

- १९७८ में लोकसभा में श्री ओम प्रकाश त्यागी ने निजी विधेयक प्रस्तुत किया, जिस पर चर्चा से पहले ही लोकसभा भंग हो गयी।
- १९७० में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने भी एक विधेयक लाकर कानून बनवाना चाहा था।
- १९६६ में बिहार विधानसभा में श्री गौरीशंकर डालमिया एक निजी विधेयक लाये।
- १९६८ में गुजरात में मुख्यमंत्री श्री कान्तीलाल फूलचन्द्र धिया द्वारा एक कानून बनवाने का प्रयास किया गया।

मतान्तरण के विरुद्ध कानून और न्यायालय

नियोगी समिति की संस्तुतियों के आधार पर १९६७-६८ में मध्य प्रदेश और उड़ीसा की प्रान्तीय सरकारों ने छल-बल या लालच से किसी व्यक्ति को अपने मत से परिवर्तन करने पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए कानून बनाये। ईसाई मिशनरियों द्वारा दोनों प्रदेशों के कानून के विरुद्ध सम्बद्ध उच्च न्यायालयों में मुकदमा दायर किया गया। उड़ीसा उच्च न्यायालय ने कानून को उचित ठहराया, जबकि मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने कानून को अवैध घोषित किया।

दो विपरीत निर्णय आने के बाद सर्वोच्च न्यायालय में अपील की गयी। १९७७ में मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति ए.एन. रे की अध्यक्षता में गठित पाँच सदस्यीय संवैधानिक पीठ ने सर्वसम्मति से कानून को विधि सम्मत बताया।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय ने इस विषय पर सभी सम्बन्धित विवादों का निपटारा कर दिया है कि— संविधान का अनुच्छेद २५(१) केवल अपने प्रचार तक सीमित है; मतान्तरण का अधिकार मौलिक अधिकार नहीं है।

अपने देश की संस्कृति की रक्षा के लिए मतान्तरण पर प्रतिबन्ध हो?

- सभी मुस्लिम देशों में मुसलमानों के मतान्तरण पर प्रतिबन्ध।
- चीन में मतान्तरण पर प्रतिबन्ध है।
- रूस में रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट चर्च को कार्य करने की छूट नहीं।

इसराइल की संसद् (Knesset) ने कानून बनाकर मतान्तरण के लिए किसी भी प्रकार का धन या सुविधा के लालच का प्रस्ताव करना दण्डनीय अपराध घोषित किया है। इसके लिए कम से कम ५ वर्ष की कड़ी कैद और भारी आर्थिक दण्ड घोषित किया है। फिर भारत में मतान्तरण पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं ?

विदेशी धन से मतान्तरण

सेवा की आड़ में मतान्तरण का चर्च का धन्धा विदेशी धन के सहयोग से ही फल-फूल रहा है। भारत सरकार के गृहमंत्रालय की "स्वैच्छिक संगठनों द्वारा विदेशी सहायता प्राप्ति" संबंधी वार्षिक रपट और चर्च द्वारा प्रसारित साहित्य इसका प्रमाण हैं।

१९६७-६८ के लिए भारत को दान भेजने वाली प्रमुख संस्थाएँ

संस्था	देश	प्राप्त धन (करोड़ रु. में)
क्रिश्चियन चिल्ड्रन्स फंड	अमेरिका	रु. ६४.७८
इवेन्जेलिस्टिक जेन्ट्रेस्टेल (ई.जैड.ई.)	जर्मनी	रु. ५६.००
फास्टर पेरेन्ट्स प्लान इंटरनेशनल	अमेरिका	रु. ५५.४५
मिसिया (इंटरनेशनल कैथोलिक मिशनरी वर्क)	जर्मनी	रु. ४८.६०
काउन्टर नाट हिल्फ (के.एन.एच.)	जर्मनी	रु. ४६.००
वर्ल्ड विजन इंटरनेशनल	अमेरिका	रु. ३७.५४
एज ऑफ इनलाइटमेंट ट्रस्ट	ब्रिटेन	रु. २७.००
इंटर चर्च-को-आर्ड मेटी	नीदरलैंड	रु. २३.००
इंटरनेशनल प्लान्ड पेरेन्टहुड फेडरेशन	ब्रिटेन	रु. २१.४५
क्रिस्टोफेल ब्लाइन्डेन मिशन	जर्मनी	रु. २०.००
आपेरा डान वोस्को	इटली	रु. १६.६०
क्रिश्चियन एड.	ब्रिटेन	रु. १६.४०
जेन्ट्रेल स्तेल फार इंटरविकशिल्फ	जर्मनी	रु. १६.१०
ब्रेड फार दी वर्ल्ड	जर्मनी	रु. १६.००
मिशन प्रौयूर	जर्मनी	रु. १५.००

- ☐ सूची की प्रथम पाँच संस्थाओं ने गत १० वर्षों में भारत में १३४४ करोड़ रु. भेजा।
- ☐ १९६१ से १९६८ के बीच जर्मनी से भारत में ३०६१ करोड़ रु. आया।
- ☐ विगत १० वर्षों में अमेरिका के फास्टर पेरेन्ट्स इंटरनेशनल और क्रिश्चियन चिल्ड्रन्स फंड ने भारत को ६१२ करोड़ रु. भेजा।

- अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, इटली और नीदरलैंड ने गत एक दशक में भारत में १० हजार करोड़ रु. भेजा।

भारत में विदेशी दान प्राप्त करने वाले प्रमुख संगठन

गत दशक में

फास्टर पेरेन्ट्स प्लान इंटरनेशनल	रु. २१०.७६ करोड़
वर्ल्ड विजन इंटरनेशनल	रु. १६५.२४ करोड़
सी.एस.आई. काउन्सिल फॉर चाइल्ड	रु. १५८.४६ करोड़

प्रतिवर्ष १२ करोड़ से अधिक प्राप्त करने वाली कुछ ईसाई संस्थाएँ

क्रिश्चियन चिल्ड्र फण्ड- कर्नाटक

फेमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इण्डिया, दिल्ली

मिशनरीज ऑफ चैरिटी, पश्चिम बंगाल

वाच टॉवर बाइबिल ट्रैक्ट सोसाइटी ऑफ इण्डिया, महाराष्ट्र

गॉस्पेल फार एशिया, केरल

इण्डियन सोसायटी ऑफ चर्चेंज ऑफ जेसस क्राइस्ट, दिल्ली

इण्डिया कैम्पस क्रूसेड फॉर क्राइस्ट, कर्नाटक

१९६७-६८ के वर्ष में १२१६८ संस्थाओं द्वारा रु. २८६४.५१ करोड़ प्राप्त किये गये।

विदेशी धन प्राप्त करने वाले प्रमुख राज्य

तमिलनाडु	रु. २३६५ करोड़
दिल्ली	रु. २०८६ करोड़
आन्ध्र प्रदेश	रु. १६६१ करोड़
महाराष्ट्र	रु. १५१८ करोड़
कर्नाटक	रु. १४८६ करोड़

गरीबों की सेवा के लिए भेजा जाने वाला धन उड़ीसा, बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश जैसे अधिक गरीब जनसंख्या वाले प्रान्तों में नहीं भेजा जाता है।

चर्च के आँकड़ों में २००० वर्ष के मतान्तरण का परिणाम

१९९७ के अन्त तक विश्व की जनसंख्या ५,८२,०७,६७,००० (पाँच अरब, बयासी करोड़, सात लाख, सरसठ हजार) थी, जो उसके पूर्व के वर्ष से ८,०६,७७,००० (आठ करोड़, छः लाख, सतहत्तर हजार) अधिक थी। इसमें से एशिया में ५,६२,४१,००० अफ्रीका में १,४६,७८,०००, अमेरिका में ७०,०६,००० और ३,२६,००० खाड़ी देशों में बढ़ी थी, जबकि इसी वर्ष यूरोप में ८,७४,०० जनसंख्या घटी थी।

इस वर्ष में विश्व में कैथोलिक ईसाइयों की जनसंख्या १,००,५२,५४,००० (एक अरब बावन लाख चौवन हजार) थी, जिसमें गत एक वर्ष में १,०१,२६,००० (एक करोड़ एक लाख छब्बीस हजार) की वृद्धि दर्ज की गयी। इसमें से ४५,६१,००० अमेरिका में, ३६,००,००० अफ्रीका में, २०,६४,००० एशिया में वृद्धि हुई, जबकि यूरोप में कैथोलिक ईसाइयों की जनसंख्या में १,०२,००० की गिरावट आयी।

इसी वर्ष में कैथोलिक ईसाइयों की अफ्रीका में ०.१८ प्रतिशत, यूरोप में ०.०३ प्रतिशत, अमेरिका में ०.०२ प्रतिशत तथा एशिया में ०.०१ प्रतिशत वृद्धि हुई, परन्तु सारे विश्व में ईसाई जनसंख्या में ०.०७ प्रतिशत की कमी दर्ज की गयी। इसका कारण ओसीनिया (Oceania) में ०.४० प्रतिशत का घाटा है।

- उक्त वर्ष में कैथोलिक ईसाई पादरियों की संख्या में एशिया में १०३७, अफ्रीका में ६०० की वृद्धि हुई, जबकि अमेरिका में ६६ तथा यूरोप में १६६४ पादरी संख्या घटी।
- इसी वर्ष में धर्म प्रचार में लगे पुरुषों की संख्या में ७५७ की कमी आयी, जबकि एशिया में ११६ और अफ्रीका में ६७ की वृद्धि हुई। यूरोप में ५३८, अमेरिका में ३१७ और Oceania में ११८ की कमी हुई।
- महिला धर्म प्रचारिकाओं में एशिया में १६६४ और अफ्रीका में ६७ की वृद्धि के बावजूद ६,३८२ की कमी आयी जिसमें यूरोप में ८१७५ और अमेरिका में ४०६४ की कमी हुई।
- कैथोलिक मत के प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्रों (Seminarian) की अफ्रीका में ६२२, एशिया में ६७३ और अमेरिका में १६०४ की वृद्धि हुई जबकि यूरोप में ७८८ केन्द्र घट गये।
- छोटे प्रशिक्षण केन्द्रों की सारी दुनिया में संख्या २७४१ घट गयी (अफ्रीका में २१८५ नये केन्द्र खुलने के बावजूद), अमेरिका में २१२३, एशिया में १७२० की संख्या इस वर्ष घटी थी।

(* FIDES - अन्तर्राष्ट्रीय समाचार एजेन्सी" से सामार)

ईसाइयों की गतिविधियाँ

१. २,६२,३०० मिशनरी अपनी मातृभूमि छोड़कर विदेश में जाकर कार्य करते हैं।
२. ४१,००,००० पूर्णकालिक ईसाई प्रचारक पूरी दुनिया में मतान्तरण के कार्य में लगे हैं।
३. ६५,००० करोड़ रुपया का वार्षिक बजट है।
४. १३,००० पुस्तकालय हैं। २२,००० पत्रिकाएँ हैं। ७५० रिसर्च सेन्टर हैं।
५. ३० लाख कम्प्यूटरों के साथ चर्च का संकलन कार्य चलता है।
६. चर्च के द्वारा १,५०० विश्वविद्यालय चलाये जा रहे हैं। ४१० मिशनरी ट्रेनिंग सेन्टर।
७. १,८०० टी.वी. और रेडियो स्टेशन चर्च के नियन्त्रण में हैं।
८. धर्मान्तरण के वैश्विक प्लान की संख्या है ७८८, इन सभी प्लानों का बजट है, वार्षिक १८०० करोड़ रुपया। सबसे बड़े धर्मान्तरण के वैश्विक प्लान का बजट है- २५०० करोड़ रुपया, दूसरे क्रमांक के ३३ गीगा प्लान हैं, जिसमें प्रत्येक प्लान में १,००,००० पूर्णकालिक प्रचारक, वार्षिक ३०० करोड़ रुपया का बजट और १० वर्ष तक इस प्लान की योजना है। (वर्ल्ड क्रिश्चियन इनसाक्लोपीडिया १९८४ एवं इंवेन्जेलेजिकल डेटाबेस)
९. विदेशी धन :- १९८० से १९८६ के बीच रिजर्व बैंक के द्वारा १,४५० करोड़ रुपये का विदेशी धन आया था। अक्टूबर से दिसम्बर, ९८ तीन माहों में ही १९ करोड़ अस्सी लाख का विदेशी धन आया था। १९९८, में विदेशी धन प्राप्त करने वाली बारह हजार संस्थाएँ भारत में हैं, जिससे अधिकांश ईसाई संस्थाएँ हैं।
१०. कैथोलिक डाइरेक्टरी के अनुसार भारत में १,१९,२५० मिशनरियाँ कार्यरत हैं। ६०,००० नन्स कार्य कर रही हैं, भारत के सवा दो करोड़ ईसाईयों में से करीबन एक प्रतिशत मिशनरी बनकर भारत में मतान्तरण के कार्य में लगे हैं। भारत में १०,००० शिक्षा संस्थाएँ ईसाईयों द्वारा चलाई जा रही हैं। ☆

ईसाइयत धर्म है या साबुन की टिककी ?

बम्बई के कार्डिनल ग्रेसियस ने सभी धर्म ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताते हैं- का समर्थन करने से इस आधार पर मना कर दिया कि "मैं एक विशेष मार्क साबुन का विक्रेता हूँ। मैं कभी भी यह कैसे कह सकता हूँ कि बाजार में बिकने वाले अन्य साबुन भी अच्छे हैं।"

ओपस-डेई (OPUS - DEI)

[एक विश्व-व्यापी माफिया गिरोह, जिसका अब वेटिकन पर वर्चस्व है।]

Opus dei का अर्थ है God's work अर्थात् ईश्वरीय कार्य। स्पेन के गृहयुद्ध के काल में एक मतान्ध ईसाई, जिसका नाम जोस मारिया एसक्राइवा डी बलाग्यूर था, ने अपने परिश्रम और संकल्प से वेटिकन को अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामवाद के सम्भावित खतरे से बचाने के लिए इस संगठन का निर्माण किया। विश्व भर में फैले दस हजार सक्रिय कार्यकर्ताओं और ८० हजार सदस्यों की संख्या के बल पर वह 'सुपर पोप' कहलाने लगा और उसने कैथोलिक चर्च पर दुनिया भर में अधिकार जमाना प्रारम्भ कर दिया।

“विश्व की अर्थव्यवस्था और राजनीति पर ईसाई वैचारिक साम्राज्य” इस घोषणा के आधार पर गठित यह विश्व का सबसे प्रभावी माफिया गिरोह है, जो वैचारिक आतंक के लिए मतान्तरण कराने और संचार संवाद माध्यमों विशेष कर विश्वव्यापी अंग्रेजी प्रेस पर नियन्त्रण जमाये हुए है। इस माफिया तन्त्र का संचालन वेटिकन से होता है। दूसरे शब्दों में आज इस माफिया गिरोह का वेटिकन पर कब्जा है।

समाचार पत्रों में वेटिकन के भ्रष्टाचारों को उजागर करने वाले प्रसिद्ध खोजी पत्रकार 'पीको मीनोरेल्ली' की हत्या के लिए उत्तरदायी इस शक्तिशाली संगठन से इटली के पूर्व प्रधानमंत्री मारियो एन्ड्रोएडी भी सम्बन्धित था।

१९७५ में संस्थापक 'एसक्राइवा' की मृत्यु के पश्चात् पिछले दशक में एक महत्त्वपूर्ण घटना हुई, जब वेटिकन के कैथोलिक चर्च को विधिवत् 'ओपस डेई' के हवाले किया गया। जिस व्यक्ति कारोल वोजटायला Karal Wojtyla ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की थी, वही जान पॉल द्वितीय के नाम से आज का पोप है।

पोप जॉन पाल प्रथम ने कैथोलिक मत में समयानुकूल उदारता की नीति अपनायी, जैसे जनसंख्या नियन्त्रण के लिए परिवार नियोजन के साधनों का उपयोग, जिसको कट्टरपंथियों ने अनुकूल नहीं माना। जान पॉल प्रथम की पोप बनने के एक माह बाद ही रहस्यमय मृत्यु हो गयी और उसका उत्तराधिकारी पोप जॉन पाल द्वितीय अर्थात् वर्तमान पोप बना।

जॉन पाल द्वितीय ने पोप बनते ही ताबड़तोड़ शीघ्रता से माफिया Opus Dei के संस्थापक 'एसक्राइवा' को 'सन्त' (Saint) की उपाधि दिलवा दी। एसक्राइवा द्वितीय विश्वयुद्ध में हिटलर द्वारा ६० लाख यहूदियों की हत्या के कृत्य का प्रशंसक व सहयोगी था।

आज जब इस्लामी आतंकवाद, कोसोवो लिबरेशन आर्मी के रूप में इटली की सीमा से

१०० किमी. से भी कम दूरी तक पहुँच गया है। यूगोस्लाविया, बोस्निया और टर्की में बढ़ रहे मुस्लिम आतंकवाद से इटली सब ओर से घिर रहा है। ऐसे में भारत जैसा देश, जो इस्लाम के आक्रमण के विरुद्ध १२०० वर्ष के संघर्ष का अनुभव रखता है, उसको वेटिकन की रक्षा के लिए अपने साथ लाना, वेटिकन अर्थात् ओपस डेई की प्राथमिकता है।

परन्तु भारत का हिन्दू वेटिकन की रक्षा के लिए क्यों लड़ेगा ? इसके लिए 'ओपस डेई' के बार्सीलोना सेमीनार में तय हुआ कि भारत में वेटिकन समर्थक सरकार बने और आतंक के मनोविज्ञान का सिद्धान्त (Psychology of Fear Theory) का उपयोग कर, वेटिकन समर्थकों में भय उपजा कर उनको इस परिवर्तन के लिए तैयार किया जाय।

क्या वेटिकन समर्थकों का राजनीति में एकाएक सक्रिय होना और गत एक वर्ष में ईसाई पर कथित हमलों का प्रचार इसी रणनीति का अंग नहीं है ?

संदर्भ- Their Kingdom cum Inside the Secret world of opus Dei
by Robert Hutchison. - 1997, Gorgi Books, London.



नैतिकता पर प्रश्नचिह्न

अमेरिका के डलास के रोम कैथोलिक चर्च और उसके पादरी फादर 'रुडोल्फ रुडी कोस', पर ११ से १८ वर्ष के ग्यारह तरुणों पर जो पादरी प्रशिक्षण केन्द्र के छात्र थे लगातार ११ वर्षों तक यौन शोषण करने का आरोप सिद्ध हुआ। १९८२ में इन लड़कों में से एक तरुण इस अपमानजनक क्रम से त्रस्त होकर आत्महत्या करने के बाद यह कुकृत्य उजागर हुआ। ११ सप्ताह तक सुनवायी और प्रमाणों की जाँच कर जूरी मण्डल की सलाह से यौन शोषण के शिकार बने १० छात्रों व आत्महत्या करने वाले छात्र के अभिभावकों को कुल मिलाकर १७ करोड़ ६० लाख डालर का मुआवजा देने का दण्ड सुनाया। यह इस प्रकार किसी एक मुकदमें में सम्भवतः बड़ा दण्ड है।

सेन्टा बारबरा के सेन्ट एन्थोनी पादरी प्रशिक्षण केन्द्र में भी ११ साधुओं द्वारा ३४ छात्रों का लगातार यौन शोषण का मुकदमा सिद्ध हुआ।

१९८२ में प्रकाशित जॉन बेरी की चर्चित पुस्तक *Lead us not into temptation : Catholic priests and the sexual Abuse of children.* में आँकड़े देकर बताया गया है, कि इस प्रकार के यौन शोषण के मुकदमों में आपसी समझौते के बदले चर्च द्वारा ६ अरब ५० करोड़ डालर (लगभग ३००० करोड़ रुपये) दिये गये हैं।

साभार- लास एन्जिलस टाइम्स

संस्कृतियों का विनाश

१६वीं शती में पोप अलक्जेण्डर षष्ठ ने दो शक्तिशाली देश स्पेन और पुर्तगाल को सारी पृथ्वी जीत कर ईसाई बनाने का ठेका दे दिया। स्पेन से भारत की खोज में चला कोलम्बस-१४९२ में अमेरिका पहुँच गया, और उसके बाद प्रारम्भ हुई वहाँ पर स्थापित संस्कृतियों के विनाश गाथा।

मय (Maya)- अमेरिका की सुसमृद्ध 'मय' संस्कृति अत्यन्त विकसित थी। १६वीं शताब्दी में स्पेन के आक्रमणकारियों के साथ कैथोलिक पादरी भी मैक्सिको पहुँचे। उन्होंने वहाँ के परम्परागत मन्दिर और स्थापत्य नष्ट किया।

१५४९ ई० में डी गोडी लेण्डा नाम ईसाई भिक्षु मध्य अमेरिका के यूकेटन (YUCATAN) तक स्पेन की सेना लेकर पहुँचा। वहाँ की प्राचीन उपासना पद्धति को समाप्त करने के लिए भीषण अत्याचार किया और धीरे-धीरे उस क्षेत्र का सेना की सहायता से सम्पूर्ण ईसाईकरण किया। 'मनि' में स्थिति मय संस्कृति का पुस्तकालय, जो विश्व में बहुमूल्य था, जला कर राख कर दिया।

सन्दर्भ- Maya- By charles Gallen Camp

इन्का (INCAS)

१५३० ई० में पेरु क्षेत्र का गवर्नर होकर फ्रान्सिसको पिज़ारो के नेतृत्व में सेनाएँ, इन्का क्षेत्र के पिज़ारों में पहुँची। उस क्षेत्र में एक विशिष्ट सभ्यता 'इन्का' जो एण्डस पर्वतमाला से प्रारम्भ होकर दक्षिण अमेरिका के 'चिली' तक लगभग ३००० मील लम्बे क्षेत्र में व्याप्त थी। इस क्षेत्र में सूर्य और शिव की उपासना होती थी।

इस अतिविकसित सभ्यता के सम्राट 'अटाहुआल्पा' (Atahualpa) ने युद्ध में स्पेन की सेना को हरा दिया। सन्धि के लिए वायदे के अनुसार निशस्त्र होकर वार्ता के लिए स्पेन के प्रतिनिधि को अपनी राजधानी गजमार्क बुलाया और स्वयं भी निशस्त्र ही गया। स्पेनी गवर्नर पिज़ारो ने अपने प्रतिनिधि के रूप में 'विन्केट डी वल्वर्डे' नामक पादरी को भेजा।

पादरी ने सम्राट को बाइबिल देकर धर्म चर्चा करनी प्रारम्भ की और इसी बीच झाड़ियों और मकानों में छिपे स्पेनिश सैनिकों ने बाहर निकालकर इन्का सम्राट को बन्दी बना लिया। इस धोखाधड़ी के बाद प्रारम्भ हुआ कत्लेआम, तीन घण्टे में ७ हजार इन्का सैनिकों की गोलियों

से हत्या कर दी।

इन्का सभ्यता को नष्ट करने के लिए सूर्य मन्दिर, पूजास्थल लूटे और नष्ट किये गये, ममी खोदकर जला दी गयी। फ्रान्सिसको डी एवेलि लिखता है— मैंने अकेले ही ३० हजार मूर्तियाँ नष्ट की और ३ हजार ममी खोद कर जला दी। स्पेनी सैनिकों और पादरियों को महिलाओं से भोगने की स्वतन्त्रता दे दी गयी। ईसाई मत स्वीकार न करने पर गुलाम बनाकर बेचा जाने लगा।

इन्का जन अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ते रहे। मैन्को, उसका पुत्र सायरी और अन्तिम इन्का राजा 'टोपाक' ने संघर्ष किया। परन्तु उनके धनुषबाण- स्पेनिश बन्दूकों का सामना नहीं कर सके। राजा को बन्दी बनाकर, ईसाई मत न स्वीकार करने पर क्रूरतापूर्वक हत्या कर दी गयी और १६१३ में 'पेरु' को 'ईसा' के नाम पर जीत कर स्पेन का गुलाम बना दिया गया।

कुजको, क्वीटो, लीमा, हुआमंगोड़ और अन्य कुछ नगरों को केन्द्र बनाकर ईसाईकरण प्रारम्भ हुआ। स्थानीय नागरिकों की सम्पत्ति छीन कर 'गुलाम' घोषित किया गया। बिना भोजन-कपड़ा दिये कोड़े की मार पर काम करने पर मजबूर किये जाते थे— 'सियाज़ा डी लियात' नामक यात्री ने १६वीं शती में वहाँ का वर्णन किया है कि अन्न और भेड़ आदि छीन लेने के कारण कुजको (Cuzco) नामक स्थान पर ५० हजार से अधिक लोग बिना युद्ध के भूख से मारे गये।

'डीगो डी रोहल्स' ने जो उस काल में वहाँ था, लिखा कि जबरिया भीषण परिश्रम और भोजन न मिलने से गत १८ वर्ष में स्थानीय आधी जनसंख्या मर चुकी है। एक-एक स्पेनी सैनिक कमाण्डर अपने कब्जे में सैकड़ों गुलाम स्त्री-पुरुषों को रखता है। १५-२० लोगों को एक ही लोहे की जंजीर में गले में बाँधकर काम पर, बोझा ढोने पर लगाया जाता है। यदि एक गुलाम गिरता है तो मजबूरन सभी गिर जाते हैं।

फिर भी अपनी भूमि पर रहते हुए 'इन्का' वासियों में अपनी पुरानी सभ्यता की स्मृतियाँ शेष थी। १५७१ में वायसराय टोलेडो ने सभी स्थानीय नागरिकों को अपना परम्परागत, पैंत्रिक स्थान छोड़कर अपने द्वारा बसाये गये स्थानों पर जाने का कठोर आदेश दिया गया। स्थानीय लोगों के विरोध के बावजूद Resettlement Plan के अन्तर्गत जीवित बचे सभी ८ लाख व्यक्तियों को उनके पुरखों की भूमि से उजाड़कर ३६ नये बसे कस्बों में रखा गया। पुरानी स्मृतियों से दूर ये पादरियों के शिकार बने और मात्र ५० वर्ष में हजारों वर्ष पुरानी ये सभ्यताएँ नाम शेष हो गयी।

सन्दर्भ- The Conquest of Incas by Jonh. Hemmina.

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा दण्ड

गोवा में पुर्तगाली शासकों ने पादरियों के कहने पर रोमन कैथोलिक ईसाइयों को छोड़कर सभी को गोवा से निकल जाने का आदेश दिया। सभी पितृविहीन बच्चों को और गैर ईसाई व्यक्तियों की सम्पूर्ण सम्पत्ति को जब्त कर लिया।

इस क्रूरता के विरुद्ध ईसाइयों को दण्डित करने के लिए १६ नवम्बर १६६७ को शिवाजी महाराज ने बारदेस, जो गोवा से सटा, पुर्तगाल नियंत्रित प्रदेश था, आक्रमण कर दिया।

पादरियों द्वारा बन्दी हिन्दुओं को वापस न करने पर, चार पादरियों को आरोप तय होने पर सार्वजनिक स्थान पर सिर कटवा कर मृत्यु-दण्ड दिया।.... इस घटना से आतंकित होकर वायसराय ने अपनी क्रूर राजाज्ञा रद्द कर दी।

संदर्भ - इण्डियन हिस्टोरिकल रिकार्ड्स कमिशनर- (१६६५-६७)

पृष्ठ २८६, ३० नवम्बर १६६७

- त्रिपुरा में आतंकवाद को संचालित करने वाले “त्रिपुरा नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट” जो वहाँ की हजारों हत्या, लूट और अपहरण के जिम्मेदार है, चर्च द्वारा समर्थन पाता है।

दैनिक संवाद- गोहाटी, ८ सितम्बर, १९९९

- संघ के चार प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए अपहरण के लिए जिम्मेदार इस संगठन को न्यूजीलैण्ड स्थित बैपटिस्ट चर्च से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है।

- आर्गनाइजर, दिल्ली २६ सितम्बर, १९९९

- ईसाई मिशनरियों द्वारा किया जा रहा मतान्तरण पीछे भारत को तोड़ने का षड्यन्त्र करने वाली पश्चिमी एजेन्सी है।

- डॉ० कोनराड एल्ट

- हिन्दू समाज के निन्दक उसके जातियों में बँटे होने की चर्चा करते हैं। हिन्दू समाज में ५०० जातियाँ हैं, परन्तु एक ही ईसा के अनुयायी चर्च २१०० समुदायों में बँट चुका है, जो आपस में शिया-सुन्नी की भाँति लड़ते हैं।

सेकुलर देशों में भी चर्च का हस्तक्षेप होता है

- इंग्लैण्ड- ब्रिटेन के राजा रानी का एंग्लीकेन चर्च का सदस्य होना अनिवार्य है। २४ बिशप व २ आर्कबिशप, संसद के उच्च सदन House of Lords के सदस्य मनोनीत होते हैं।
- इटली- वहाँ का संविधान कहता है- 'कैथोलिक मत के ईसाई तत्व ही सार्वजनिक शिक्षा की नींव और शिखर दोनों हैं।' शिक्षकों और उपदेशकों को चर्च अधिकारियों की सम्मति लेनी पड़ती है, अन्यथा वे पद से बर्खास्त कर दिये जाते हैं।
- पुर्तगाल- शिक्षा चर्च के अधिकारियों की सम्मति से ही होनी अनिवार्य है।
- कोलम्बिया- कैथोलिक मत के अतिरिक्त किसी भी अन्य को अपने पूजाघर से बाहर प्रचार की अनुमति नहीं है।
- डेनमार्क- यहाँ का राष्ट्रीय चर्च लूथेरियन चर्च है। इसी चर्च को राज करने का अधिकार है और चर्च की सभी गतिविधियों के लिए धन सरकार द्वारा दिया जाता है।
- नार्वे- राजा सदैव लूथेरियन चर्च का अनुयायी होगा। आधे से अधिक मन्त्रियों का मनोनयन चर्च करेगा। सभी विद्यालयों में ईसाई मत की शिक्षा अनिवार्य है।
- स्वीडन- ईसाइयों के अतिरिक्त अन्य मत के व्यक्तियों को अपने बच्चों की शिक्षा के लिए विद्यालय चलाने पर प्रतिबन्ध है।
- अमेरिका- वहाँ के न्यायालयों ने अमेरिका को ईसाई देश माना है। "अमेरिका के बहुसंख्यक लोग ईसाई होने के कारण हमारे कानून और संस्थाएँ ईसा के उपदेशों से अनुप्राणित होनी चाहिए।" हमारी नीतियों का प्रारम्भ ईसाई मत द्वारा हुआ है। हमारी न्याय व्यवस्था की मूल चेतना वही है। सरकारी प्रशासन के पार्श्व भूमि में ईसाई मत है। कुल मिलाकर ईसाई मत देश के कानून का हिस्सा है।

- अमेरिकन चर्च लॉ०, लेखक- डॉ० जालमन

तो फिर भारत में नैतिक शिक्षा, योग शिक्षा, दीपक जलाना, या सरस्वती वन्दना से यहाँ की सैकुलर छवि कैसे भ्रष्ट हो जाती है ?



साम्राज्यवाद की चौथी सेना

चर्च संस्थां ने सदैव साम्राज्यवादियों के साथ मिलकर राष्ट्रों का शोषण करने हेतु ही मतान्तरण का कार्य किया है। साम्राज्यवाद का स्वरूप बदलने के बाद आज भी चर्च पश्चिमी साम्राज्यवादियों का सहयोगी है। विश्व में मानवता, स्वतन्त्रता, न्याय आदि के लिए अनेक संगठन बने हैं। इनमें से संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (I.L.O.), अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (Human Rights commission)... आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त संगठन हैं। ये सब कुछ श्वेत वर्ण वाले पश्चिमी देशों के हितों का संरक्षण करने और लाभ पहुँचाने का काम करते हैं। दुनिया के गरीब, पिछड़े, राष्ट्रों का शोषण व उनकी आपसी एकता नष्ट करने वाले समझौते कर वे शक्तिशाली और सम्पन्न राष्ट्रों के हित के लिए कमजोर देशों पर दबाव डालते हैं। एक उदाहरण- अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघ (I.L.O.) ने वनवासियों को पहले Forest Dwellers ही कहा परन्तु बाद में इनके लिए Tribe शब्द का प्रयोग हुआ। वनवासियों के लिए प्रयुक्त Tribal population शब्द उन्हें राष्ट्र का अंग बताता था, परन्तु बाद में population के स्थान पर Peoples शब्द प्रयोग हुआ जो वनवासियों को अलग राष्ट्र के रूप में प्रगट करता है। यह peoples शब्द राष्ट्रीयता का वाचक है न कि राष्ट्र के अन्तर्गत एक अंग का।

१९६२-६३ में नरसिंहराव के प्रधानमन्त्रित्वकाल में I.L.O. ने Indigenous people के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पारित करना चाहा था। इस प्रस्ताव को मूल रूप में पारित करने का अर्थ होता कि भारत की प्रत्येक वनवासी जाति को स्वतन्त्र राष्ट्रीयता प्राप्ति का अधिकार मिल जाता और तब यही पादरी वनवासियों को अलग राष्ट्रीयता के आधार पर अलग स्वतन्त्र देश दिलवाने की माँग अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाने का अधिकार प्राप्त कर लेते। भारत के विघटन कराने के प्रयास में लगे आन्दोलनों को अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ स्वतन्त्र रूप में सहायता कर सके, इस भयावह कल्पना को हम अनुभव कर सकते हैं, तब क्या होता ?

भारतीय वनवासियों की सेवा में लगे वनवासी कल्याण आश्रम के संस्थापक अध्यक्ष (स्व०) श्री रमाकान्त केशव उपाख्य बालासाहब देशपाण्डे ने तथ्यों व आँकड़ों के साथ समय रहते आगाह कर दिया। इसी प्रयास के कारण भारतीय प्रतिनिधियों ने आई०एल०ओ० में अपना पक्ष रख कर, इस प्रस्ताव को पारित होने से रोक दिया।

मिशनरी दलित, पिछड़े, हरिजन आदि जातियों को भी वनवासियों की तरह अलग-अलग पहचान दिलाकर देश के बँटवारे का कुचक्र रचते हैं। गांधीवादी विद्वान श्री जे०सी० कुमारप्पा, जो स्वयं भी ईसाई थे ठीक ही कहा था, साम्राज्यवाद की तीन सेनाओं (थल, जल, वायु सेना) के साथ ही चौथी सेना चर्च है।

पोप की दिल्ली में घोषणा

५, ६, ७ नवम्बर १९६६ को दिल्ली में पोप जॉन पाल द्वितीय द्वारा एशिया के विश्व सम्मेलन में आगामी सहस्राब्दि में दिशा-निर्देश करने वाला दस्तावेज, एकलेसिया इन एशिया घोषित किया। इसके अनुसार—

- पहली सहस्राब्दि में ईसाई पंथ ने यूरोपीय जमीन पर अपनी जड़ें अच्छी तरह जमा लीं और दूसरी सहस्राब्दि में अमेरिका और अफ्रीका में इस धर्म ने अपनी स्थिति मजबूत की। इस तीसरी सहस्राब्दि में इस विशाल और महत्त्वपूर्ण महाद्वीप एशिया में ईसाई धर्म अच्छी तरह फले-फूले।
- चर्च का उद्देश्य सभी लोगों को ईसाई बनाना है।
- चर्च को ईश्वर द्वारा सौंपा गया कार्य तब तक पूर्ण नहीं होगा जब तक मनुष्य का धर्म परिवर्तन न हो जाय।
- जो व्यक्ति ईसाई बनता है, वह खुद ईसाई बनाने वाला बन जाता है।
- एशिया का चर्च मिशनरियों को भेजे, यद्यपि उन्हें अपने खेत के लिए मजदूर चाहिए।
- ईसाईकरण के लिए हर धर्म प्रदेश में संचार और मीडिया के दफ्तर बनाये जायें, इससे मदद मिलेगी।
- कैथोलिक स्कूलों और पादरी समुदायों में मीडिया की शिक्षा और मीडिया की सामग्री का आकलन शामिल किया जाना चाहिये।
- चर्च के समारोहों में दीपक, आरती, वेद मंत्र आदि को पोप 'सांस्कृतिक ग्रहण' मानते हैं।

वेटिकन शहर को एक देश कहना वास्तव में अजीब लगता है। सिर्फ ११० एकड़ क्षेत्रफल में फैला और ८५० नागरिकों (केवल पुरुष, वेटिकन में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है) की जनसंख्या वाला (१९६६ की जनगणना के अनुसार) दुनिया का यह सबसे छोटा देश १९२६ में अस्तित्व में आया। छठी शताब्दी तक कैथोलिक पोप ही रोम के शासक थे। बाद में १७९७ में पोप के अधिकांश राज्य पर कब्जा कर लिया गया और १८१५ में पोप के राज्यों की तमाम सत्ता आस्ट्रियाई संरक्षण में रख दी गयी। १८७० में इटली के राजा विक्टर इमैनुएल द्वितीय ने पोप शासित राज्यों को पूरी तरह समाप्त कर सम्पूर्ण क्षेत्र एकीकृत इटली में शामिल कर दिया और पोप को सिर्फ वेटिकन शहर तक सीमित कर दिया।

नस्लवाद एवं उपनिवेश के प्रतीक पोप

१. पोप का चुनाव सदैव गोरी चमड़ी वाले लोगों में से ही होता है। अभी तक विश्व को धार्मिक शासन प्रदान करने हेतु २६२ पोप हो चुके हैं जो सभी गोरी चमड़ी वाले हुए हैं।
२. सफेद चमड़ी वाले पोपों ने ईसाई धर्म को रोमन कैथोलिक धर्म का नाम दिया और ईसा मसीह के जन्मस्थान येरुशलम (वेथलहम) के बजाय रोम स्थित वैटिकन नगर को ईसाइयों का पवित्र तीर्थ स्थान घोषित किया तथा रोम को ईसाइयों का मक्का बना दिया।
३. ईसा मसीह के सादे व उच्च मूल्यों पर आधारित जीवन के बजाय ईसाइयों को रोम के रीति-रिवाजों पर आधारित स्वच्छन्द वासनायुक्त जीवन-प्रणाली को अंगीकार करना पड़ता है।
४. गोरी चमड़ी वाले पादरी भारत के ईसाई मिशनों में कार्य करने भेजे जाते हैं जबकि भारतीय पादरियों को विदेशों में नहीं भेजा जाता है।
५. दक्षिणी अफ्रीका के गोरे शासन की रंगभेदी नीति के समर्थन में पोप ने वहाँ केवल गोरी चमड़ी वालों को पादरी नियुक्त किया।

संसार में सफेद चमड़ी वालों के राजनैतिक शासन के अन्त के पश्चात् अब ईसाइयत सफेद चमड़ी वालों के धार्मिक शासन हेतु एक उपनिवेश बन कर रह गया है।

पोप को प्रवेश नहीं मिला

चीन ने पोप को न केवल अपने देश में आने से रोका; वरन् अपने वहाँ के पादरियों को एशियाई पादरियों की धर्मसभा में जाने की अनुमति नहीं दी।

स्मरण रहे चीन में ईसाई जनसंख्या ५ करोड़ से अधिक है।

श्रीलंका- १९६५ में पोप जॉन पाल द्वितीय की श्रीलंका यात्रा का उग्र विरोध वहाँ के सिंहली और बौद्ध समाज ने किया। उनको श्रीलंका में बढ़ रहे ईसाई धर्मान्तरण से शिकायत थी।

आरोप है कि ईसाई चर्च लंका को संकट में डालने वाले लिट्टे (LTTE) का समर्थक है।

इण्डोनेशिया और ताइवान ने अपने देश में पोप के आने पर रोक लगाई हुई है।

यूरोपीय देशों में चर्च की सामान्य उपस्थिति घटकर १० से १५ प्रतिशत के बीच आ गयी है। रोम में यह ३ प्रतिशत से भी कम है। वहाँ चर्च बिक रहे हैं।

पोप पहले भी कई जगह माफी माँग चुके हैं भारत में भी बर्बरता की माफी माँगें

चर्च दुनिया भर में किए गये अमानवीय अत्याचारों पर पोप और रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा कई बार कई जगह माफी माँगी गयी। इनमें से प्रमुख हैं-

1. फ्रांसीसी आर्चबिशप ओलिवर डी बेरेयर ने कहा- 'हम प्रभु से माफी माँगते हैं और यहूदियों से विनती करते हैं कि वे हमारे पश्चात्ताप के शब्दों को सुन लें' (संदर्भ : न्यूज वीक, १३ अक्टूबर, १९९७)
2. जर्मनी के कैथोलिक बिशप ने जनवरी, १९९५ में जर्मनी में हुए नरसंहार में यहूदियों की रक्षा न कर पाने पर खेद व्यक्त किया। (संदर्भ : टाइम्स आफ इंडिया, ३० जनवरी, १९९५)
3. डोमनिकन गणतंत्र की अपनी यात्रा के दौरान पोप जान पाल-द्वितीय ने स्थानीय लोगों से कहा- ५०० वर्ष तक 'इण्डियन' (वहाँ के स्थानीय मूल निवासी) लोगों पर जिन्होंने दुःख और यातनाएँ बरपाईं, उन्हें माफ कर दें' (संदर्भ : सी.आई.एम.आई.- इंडियानिस्ट मिशन काउंसिल, ब्रासीलिया, १५ अक्टूबर, १९९२)
4. पोप जान पाल-द्वितीय प्रेसोवा स्थित पूर्वी यूरोपीय देश स्लोवाकिया की यात्रा पर थे। वहाँ रोमन कैथोलिक ईसाइयत स्वीकार न करने पर १९८७ में २४ कैल्विनपंथियों (स्थानीय पंथ के अनुयायी) की हत्या के लिए माफी माँगी।
(संदर्भ : टाइम्स आफ इंडिया में सम्पादकीय, ५ जुलाई, १९९७)
5. जमैका के रोमन कैथोलिक चर्च ने १७ अक्टूबर, १९९९ का दिन अरावाकों (स्थानीय जनजाति) के नरसंहारों पर पश्चात्ताप करने का निर्णय किया। (संदर्भ : किंगस्टन, ११ अक्टूबर, १९९९, जिसका १२ अक्टूबर, १९९९ के हिन्दुस्तान टाइम्स में उल्लेख है।)

पोप बतायें

पोप जॉन पाल द्वितीय पिछले वर्ष दक्षिण अमेरिकी देशों के दौरे पर गये थे। वहाँ प्रोटेस्टेंट ईसाई मिशनरियों के बढ़ते प्रभाव से क्रुद्ध होकर कहा, "ये प्रोटेस्टेन्ट मिशनरी भेड़िये मेरी कैथोलिक भेड़ों का अपहरण कर रहे हैं।"

हिन्दुओं का मतान्तरण करने वाले को हिन्दू समाज क्या कहे ?

नेपाल में ईसाइयत का कुचक्र

विश्व का एकमात्र घोषित हिन्दू राष्ट्र आज चर्च के निशाने पर है। चीन और भारत के मध्य हिमालय में बसा नेपाल भू राजनैतिक दृष्टि से अति महत्त्व का है।

१९५१ में चर्च का प्रसार कार्य प्रारम्भ हुआ, १९६० तक मात्र २५ व्यक्तियों का मतान्तरण करा सका। १९८५ में २५ हजार ईसाई जनसंख्या १९९१ में ५० हजार से अधिक हो गयी।

१९९० में नेपाल में बनी सरकार ने संविधान में बदल कर १९९१ से अपने मत का प्रचार करने की छूट दे दी। इसके बाद से ईसाई मत प्रचार की बाढ़ आ गयी। चर्च द्वारा प्रकाशित 'आपरेशन वर्ल्ड' के अनुसार-

- १९९५ तक १०३० चर्चों के ५२०१५ सदस्य और १०,८,४०० (एक लाख आठ हजार चार सौ) सम्बद्ध सदस्य ईसाई बन गये थे।
- नेपाल की सम्पूर्ण जनसंख्या वृद्धि की दर २.१ प्रतिशत है परन्तु ईसाई जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत १३.५ है।
- नेपाल में ५८२ मिशनरी कार्यरत हैं जिनमें से १५५ नेपाली मूल के हैं।
- सभी ६४ प्रमुख नगरों में (जिनमें से ६६ नगरों में १९९२ तक कोई ईसाई नहीं था) आज चर्च का कार्य सक्रिय है।
- बाइबिल प्रशिक्षण व पादरी शिक्षण के अनेक केन्द्र प्रारम्भ हुए हैं। ए०ओ०जी०, नेपाल बाइबिल आश्रम, नेपाल थियोजोलिकल सेमिनरी, ओम, (आपरेशन-मोबलाइजेशन) सी०सी०सी०, वाई०एम०ए०एम० आदि अनेक नामों से चल रहे हैं।
- सागरमाथा (माउण्ट एवरेस्ट) के निकट रहने वाली शेरपा और तमांग जाति के हजारों व्यक्ति ईसाई बने हैं।
- तिब्बत के विस्थापित को आवश्यक सहायता देकर ईसाई बनाया जा रहा है।
- विश्वविद्यालय के ४०० छात्रों को चर्च ने अपने घेरे में लिया है।
- युनाइटेड मिशन ऑफ नेपाल में १८ देशों के ३०० मिशनरी कार्यरत हैं, जो ४० ईसाइयत प्रचार की एजेन्सी चला रहे हैं।
- १२ देशों से मत प्रचार हेतु इण्टरनेशनल नेपाल फैलोशिप के नाम से लाये गये हैं।
- अपनी वीरता के लिए विश्वविख्यात गोरखा सैनिक जो भारत के अतिरिक्त ब्रिटिश, हांगकांग, ब्रूनैल, सिंगापुर आदि देशों की सेना में कार्यरत है, वहाँ सम्पर्क में लाकर ईसाई

बनाया जाता है, जो सेवा निवृत्ति के बाद अपने गाँवों में ईसाइयत का प्रचार करते हैं, इनमें विशेषकर गुरंग, मगर, लिम्बू, राइ आदि जातियों में विशेष सफलता मिली है।

- अब अवैध मतान्तरण कराने वाले लगभग ४०० पादरियों की जेल से मुक्ति इस संविधान संशोधन के तहत हो गयी है, जिससे पादरी उत्साहित हुए हैं।
- अब ईसाई मत प्रचार साहित्य की प्रकाशन से नेपाल में प्रतिबन्ध समाप्त हो जाने से साहित्य नेपाल की ३० प्रतिशत जनसंख्या तक पहुँचाने का लक्ष्य है। काठमाण्डू स्थित वाइबिल सोसायटी बुकशॉप तथा आपरेशन मोबलाइजेशन का साहित्य इसमें उल्लेखनीय सहयोग कर रहा है।
- टेप, कैसेट ८८ बोलियों में उपलब्ध है। प्रतिदिन रेडियो प्रसारण होता है। जीसस क्राइस्ट नामक फिल्म का व्यापक प्रचार हुआ है।

Kingdom of Nepal- Operation world Page 405-7

स्थानीय समाचार पत्रों में नेपाल में मतान्तरण की विषय वेल ने नेपाली समाज को चौंकाया है। दस वर्ष पूर्व जहाँ नाम भी नहीं था, वहाँ आज ईसाई बहुसंख्यक हो गये हैं।

धादिङ जिले के शेरतुङ, सारलांगा, लापा, रि और तपलिङ गाँव में जहाँ २५ वर्ष पहले शत-प्रतिशत जनसंख्या बौद्ध थी, आज वे वहीं अल्पसंख्यक हो गये हैं। बौद्ध पूजा स्थल (गुम्बा) से अधिक चर्च इस क्षेत्र में है।

दैनिक जागरण - १६ नवम्बर ६६

नेपाली पत्रिका काठमाण्डौ टुडे लिखती

तीस वर्ष पूर्व पोखरा और बुटवल के रास्ते ईसाई मिशनरियाँ यहाँ गयीं, दवा के नाम पर ईसा मसीह का प्रसाद और साहित्य मुफ्त बाँट कर इन मिशनरियों ने लोगों को प्रभावित किया। पहले एक आदमी बीमारी से जान जाने के एवज में ईसाई बना आज धीरे-धीरे पूरा गाँव उस रास्ते पर है। लोगों ने विवाह संस्कार ईसाई रीति-रिवाज द्वारा करने प्रारम्भ कर दिये हैं। अब परम्परागत दशहरा और दीवाली के स्थान पर ईस्टर क्रिसमस मनाया जाने लगा है।

मिशनरियों ने अत्यन्त पिछड़े और सरकारी सुविधा से वंचित क्षेत्र को चुन कर 'हिमालय स्वास्थ्य सेवा संस्थान' नामक संस्था खोली। इसी के आधार पर मिशनरी कार्यकलाप का विस्तार हुआ। इस संस्थान में काम करने के लिए भारत के मेघालय प्रान्त से एच०एस० डॉन के नेतृत्व में टोली आयी है, जिसमें मूल बौद्ध से परिवर्तित ईसाई थे।

ईसाइयों ने अपरोक्ष रूप से नेपाल की राष्ट्रीय राजनीति में भी धमक दी है। ईसाई मिशनरियों का नव मतान्तरितों के लिए आदेश है कि वे नेपाली वामपन्थी दलों तथा राष्ट्रीय प्रजातान्त्रिक पार्टी को वोट न दें।

चर्च का अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र

चर्च का कार्य धर्म-प्रसार मात्र नहीं; वरन् पश्चिमी शक्तियों की विश्व रणनीति का वह एक प्रबल अस्त्र है। १९३८ में चर्च का “वर्ल्ड इकुमैनिकल मूवमेन्ट” नामक अभियान इन्हीं साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए ‘वर्ल्ड काउन्सिल ऑफ चर्चेज’ (W.C.C) द्वारा प्रारम्भ किया गया था। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण १९४३ में उसका प्रथम सम्मेलन एमस्टरडम में हुआ था।

संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन चर्च के दबाव से

अपने समय की राजनीति के दो महत्त्वपूर्ण व्यक्ति इंग्लैण्ड के सर स्ट्रेफोर्ड क्रिप्स और अमेरिका के जान फॉर्स्टर डलेस (जो बाद में अमेरिका के विदेश सचिव रहे) दोनों ने चर्चों की विश्व एकता के लिए प्रयास किया। डलेस ने अपनी पुस्तक ‘वार एण्ड पीस’ में विस्तार से लिखा है कि किस प्रकार चर्चिल और रूजवेल्ट ने १९४१ में न्यूफाउण्डलैण्ड में मिलकर अटलांटिक चार्टर घोषित किया, परन्तु वे एक साझा विश्व मंच, जिसमें ईसाई देशों का वर्चस्व हो, बनाने के लिए रूजवेल्ट तैयार नहीं हुए। इस पर चर्चों ने मिलकर ‘कमीशन ऑन ऐ जस्ट एण्ड ड्यूरेबल पीस’ का गठन कर जनमत जागरण का अभियान चलाया। संयुक्त राष्ट्रसंघ (U.N.O.) का निर्माण चर्च के इस दबाव में हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई दबाव

संयुक्त राष्ट्रसंघ को ईसाई समुदाय के प्रभाव में रखने के लिए “वर्ल्ड काउन्सिल ऑफ चर्चेज” एवं “इण्टरनेशनल मिशनरी काउन्सिल” ने मिलकर १९४६ में ‘कमीशन आफ दी चर्चेज ऑन इण्टरनेशनल अफेयर’ बनाया, जिसको बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्ध किया गया। (एब्रीमैन्स यूनाइटेड नेशन्स पृ.- २३)

उपर्युक्त कमीशन दो प्रकार से कार्य करता है :-

- (१) सभी चर्चों से सम्बन्धित ईसाइयों का संगठन कर उस देश की राजनीति को ईसाइयों के अनुकूल बनाना।
 - (२) विश्व के ईसाइयों की संगठित ताकत के बल पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करना।
- सैनिक संगठन भी चर्च की विश्वव्यापी राजनीति का भाग है

१९४४ में अमेरिका के इवान्सटन में सम्पन्न W.C.C. के द्वितीय सम्मेलन में एक अन्तर्राष्ट्रीय नीति धर्मान्तरण और मिशनरियों के प्रवेश को लेकर बनी, साथ ही एशियाई सुरक्षा संधि पर विचार हुआ। (रिपोर्ट ऑफ दी कमीशन ऑफ चर्चेज, इन्टरनेशनल अफेयर पृ. २५३)

और इसके बाद २ सितम्बर १९५४ को सीटो (साउथ ईस्ट एशिया ट्रीटी आर्गनाइजेशन) नामक सैनिक गठबन्धन बना।

चर्च का एजेण्डा—भारत की राजनीति पर नियन्त्रण

स्वतन्त्रता के बाद एशिया में ईसाईकरण के केन्द्र के रूप में भारत को चुना गया। भारत के पहले आम चुनाव के समय १९५२ में लखनऊ में W.C.C. तथा अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी काउन्सिल के संयुक्त तत्त्वावधान में 'इकुमैनिकल स्टडी कांफ्रेंस' आयोजित की गयी। इसमें ईसाइयों से सामाजिक न्याय बढ़ाने के लिए राजनैतिक कब्जा जमाने को तैयार रहने का आह्वान किया गया। (क्राइस्ट, दी होप ऑफ एशिया पृ. ३१)

“वर्ल्ड काउन्सिल ऑफ चर्चेज” का तीसरा सम्मेलन १९६१ में दिल्ली में हुआ। इसमें ‘धर्म स्वातंत्र्य’ की परिभाषा में संशोधन का प्रस्ताव किया गया, जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५ (१) के विपरीत है—“धर्म की आस्था का आचरण” को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मापदण्ड अन्तर्राष्ट्रीय के स्तर पर करने की माँग की गयी।

१९६८ के बैंकाक पूर्वी एशिया ईसाई सम्मेलन में चर्चों से विभिन्न स्वरूपों में शक्ति के प्रयोग, दंगा, विद्रोह, गदर, क्रान्ति के रूप में सत्ता की खिलाफत और प्रतिरोध की धार्मिक व्याख्या बनाने” लिए तैयार रहने को कहा गया। (क्रिश्चियन ऐक्शन इन एशियन स्ट्रगल-पृ. ६)

यह प्रस्ताव उस कालखण्ड में चले पूर्वोत्तर में विद्रोह, नक्सलवाद आदि आन्दोलन में चर्च की भूमिका का आधार था।

१९७८ में “वर्ल्ड काउन्सिल ऑफ चर्चेज” की केन्द्रीय कमेटी के निर्देश पर आकलैण्ड में एशिया में नरलवाद से लड़ने के लिए एक परिसंवाद आयोजित किया गया, जिसमें १२ देशों के प्रतिनिधियों ने एकत्र होकर भारत में दलित ईसाई का मसला उठाने के लिए चर्च को निर्देश दिये। उसी के बाद ही बिहार के बेलछी काण्ड सहित उ.प्र. और दक्षिण भारत में जातीय युद्ध में अक्समात्र वृद्धि हुई।

चर्च भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करता है

१९६१ में केरल के आर्कबिशप और १६ बिशपों ने आदेश-पत्र लिखकर ईसाइयों को सूचित किया कि ‘कम्प्यूनिस्टों का विरोध हमारा पवित्र कर्तव्य है।’

तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने इस पर टिप्पणी की थी—“यह खतरनाक है और हमारे देश की राजनीति में हस्तक्षेप है।”

भारत की जनगणना के अनुसार (१९८१ से १९९१ तक)

देश के २४ जिले में जहाँ ईसाई जनसंख्या १०० प्रतिशत से अधिक बढ़ी—

विजयनगर- २२०.१३, अरुणाचल- २२६.००, पूर्वी समांग- ३८५.१, पूर्वी शिगांग- २३३.८०, लोहर सुवन्सर- ३२५.७५, तिराप- १२२.२३, तन्ना सुनासिरी- १२०४.४२, पश्चिमी रोहंग- १५५.८, भर- १०३८.८३, सूरात १२०.३६, दादंडा- ४१६.७७, किशूर- १६६.३, ऊना- १६३.४, मिण्ड- १८२.४५, गुना- १४८.८४, सीधी- १३४.३०, सोन- ११६.७५, सिरौही- २८५.६०, पेरियार- ६२८.६०, प० त्रिपुरा- १७२.३१, गाजियाबाद- २६४.२५, लखनऊ- १११.६३, टेहरी गढ़वाल- ३६७.२१, उन्नाव- १६८.३६, उत्तर काशी- ४६३.३३।

८ जिले जहाँ ७५ प्रतिशत अधिक ईसाई जनसंख्या वृद्धि हुई

लोहित- ७७, देवरा- ७६.७, फुलवनी- ७६.१७, लुधियाना- ८१.५३, उदयपुर- ७६.७३, बुलन्दशहर- ६०.६०, रायबरेली- ८१.०६, मुर्शिदाबाद- ८१.७०।

१९८१-९१ तक ८५ जिलों में ईसाई जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत ४० से अधिक था, जबकि इस कालखण्ड में देश में औसत जनसंख्या वृद्धि २४ प्रतिशत हुई।

ईसाई जनसंख्या का भारत में बढ़ता प्रतिशत

१८८१- ०.७१, १८९१- ०.७७

१९०१- ०.६८, १९११- १.२१, १९२१- १.४७, १९३१- १.७७, १९४१- १.९१,

१९५१- २.३५, १९६१-२.४४, १९७१- २.६०, १९८१- २.५३, १९९१- २.६१।

सन्दर्भ- भारत की जनगणना

इसके अतिरिक्त

- १९८० में ७,६३,७०० क्रिस्टो ईसाई थे, २००० ई० तक उनकी संख्या बढ़कर १,५८,६१,००० हो जायेगी।
- अर्थात् देश की जनसंख्या का ४.५७ प्रतिशत जिनमें से १.५ प्रतिशत क्रिस्टो ईसाई होंगे।

सन्दर्भ- आपरेशन वर्ल्ड

भारत के उत्तर पूर्वांचल में बढ़ रही ईसाई जनसंख्या

प्रदेश	१९५१	१९६१	१९७१	१९८१	१९९१
असम	३,३७,९५३	४,९३,६४१	६,६७,१५१	-	७,४४,३६७
अरुणाचल	एक भी नहीं	एक भी नहीं	३६४	२७,३०६	८९,०१३
मणिपुर	६३,६९४	१,५२,०४३	२,७९,२४३	४,२१,७०२	६,२६,६९६
मेघालय	१,४९,३७८	२,७०,९१२	४,५५,२६७	७,०२,८५४	११,४६,०९२
मिजोरम	-	-	-	४,१३,८१८	५,९१,३४२
नागालैण्ड	९८,०६८	१,९५,५८८	३,४४,७९८	६२,१९०	१०,५७,९४०
सिक्किम	-	-	-	७,०१५	१३,४१३
त्रिपुरा	५,२६२	१०,०३९	१५,७१८	२४,८७२	४६,४७२

सन्दर्भ- भारत की जनगणना

चौधरी चरण सिंह भी पोप की यात्रा के विरोधी थे

पोप जॉन पाल द्वितीय की यह दूसरी भारत-यात्रा थी। १९८६ की एक फरवरी को भी वे भारत आ चुके थे। उस समय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने उनको निमन्त्रण दिया था।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने राजीव गांधी को पत्र लिखकर प्रश्न पूछा था कि- पोप को निमन्त्रण धर्मगुरु के नाते दिया है या वेटिकन के राज्याध्यक्ष के रूप में ? प्रधानमंत्री कार्यालय ने उत्तर दिया- पोप राष्ट्राध्यक्ष के रूप में भारत आ रहे हैं और उसी स्तर पर उनको सम्मान दिया जायेगा।

चौधरी चरण सिंह ने पुनः पत्र लिखकर स्पष्टीकरण माँगा- किसी भी राष्ट्राध्यक्ष की यात्रा किसी निहित उद्देश्य के लिए होती है, उसकी यात्रा के समय कुछ समझौते भी होते हैं। जैसे- आर्थिक, आयात-निर्यात, सांस्कृतिक आदान-प्रदान आदि और उसके लिए उससे पूर्व कोई उच्चस्तरीय शिष्टमण्डल आकर इन समझौतों का प्रारूप निर्धारित करता है। इस बार भी यह सब हुआ क्या ?

वेटिकन-वाशिंगटन गठजोड़- जिसने सोवियत रूस तोड़

पोप जॉन पाल द्वितीय सोवियत साम्राज्य को ध्वस्त करने की चामी सिद्ध हुए। बर्नस्टीन द्वारा लिखित पॉलिट ब्यूरो की कार्यवाही में तथा रूसी सत्ता के केन्द्र क्रेमलिन के वरिष्ठ नीति निर्धारकों द्वारा पूर्वी यूरोप में बढ़ा हुआ चर्च का प्रभाव क्षेत्र को चेतावनी माना जा रहा था। ऐसे समय में ही अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने गुप्त रूप से वेटिकन और पोप से सम्पर्क साधा। गुप्तचर एजेन्सी सी.आई.ए. का प्रमुख विलियम कैसी इसका माध्यम था। सी.आई.ए. से वेटिकन का पुराना सम्पर्क है। कैसी से लगातार सम्पर्क द्वारा पोप 'सोलिडरटी' नामक कम्यूनिस्ट विरोधी संगठन के प्रेरणा-स्रोत बनाये गये। पोप ने अपने कालखण्ड में अपने समय के चर्चिल और खूबवेल्ड को भी पीछे छोड़ दिया। रीगन के साथ मिलकर कम्यूनिस्टों के विरुद्ध बने इस गठजोड़ ने पोलैण्ड में भूमिगत सोलिडरटी आन्दोलन को जीवन दिया और अन्त में रूस को कुचलने में सफलता पायी।

संदर्भ - चर्च द्वारा प्रकाशित पोप की जीवनी-

"His Holiness John Paul II and the Hidden History of our time".

भारत की एकता को छिन्न-भिन्न करके उसको फिर से अपने अनुकूल शासन में लेना यह चर्च की रणनीति है-

- संयुक्त राष्ट्रसंघ में अमेरिका की प्रतिनिधि सुश्री जीन क्रिक पैट्रिक ने स्पष्ट घोषणा की है- सोवियत रूस, पोलैण्ड और चैकोस्लोवाकिया को तोड़ने के बाद अब भारत हमारे एजेण्डे पर है।

- चर्च के अधिकृत दस्तावेज 'आपारेशन वर्ल्ड' में भी स्पष्ट है ईसाई को ईश्वरीय आदेश है कि ईसाई विरोधी सरकार पलट दे (It is the God-given duty to christians to pull down a Government opposed to Christianity.)

अपना मोहरा बनाना चाहते हैं भारत को

संभावित आगामी तृतीय महायुद्ध के विषय में अमेरिका व यूरोप का आकलन है कि इसका एक पक्ष इस्लाम का अन्तर्राष्ट्रीय संगठन होगा और दूसरा पक्ष वेटिकन। लगातार बढ़ रहा इस्लामिक आतंकवाद, कोसावो तक पहुँची इस्लामी सेनाएँ, पाकिस्तान पर हाल में हुआ सेना का नियंत्रण यह सब इनकी चिन्ता को बढ़ा रहा है। भू राजनैतिक समीकरण तथा समृद्ध ईसाई देशों में चर्च के प्रति बढ़ती उपेक्षा, सैनिक अभियानों का विरोध का वातावरण ईसाई शक्तियों की समस्या है। प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध में उनकी विजय का कारण बना था भारत, भारत के संसाधन और भारतीय सैनिकों की अनुपम वीरता। परन्तु अब भारत उनके साथ कैसे आयेगा ? उनकी रक्षा के लिए भारतीय क्यों बलिदान देंगे ? यह प्रश्न उनके सामने है।

पिछले युद्धों में भारत पर अंग्रेजी राज्य होने के कारण भारत इनके पक्ष में लड़ा था। संभावित युद्ध के समय भारत में यदि वेटिकन समर्थक शासन रहा, तो फिर पलड़ा झुक सकता है। इसलिए भारतीय राजनीति में चर्च का हस्तक्षेप एकाएक बढ़ा है। प्रचार माध्यमों में भी ईसाई समर्थक तत्वों ने योजनापूर्वक अपना तंत्र खड़ा किया है।

वर्ल्ड काउंसिल आफ चर्चेंज द्वारा घोषित आपरेशन वर्ल्ड- २००० के अन्तर्गत भारत में ईसाइयत के प्रचार को प्राथमिकता दी गयी है। इस योजना के प्रमुख अंग हैं-

१. हिन्दू समाज में अपनी धर्म संस्कृति के प्रति अनास्था पैदा कर हिन्दू स्वाभिमान नष्ट करना, जिससे वे मतान्तरण करने में न हिचकें।
२. हिन्दू पर्व, उत्सव, देवी-देवता, महापुरुषों का उपहास व अनादर तथा सौन्दर्य प्रतियोगिता और 'वेलेंटाइन डे' जैसे कार्यक्रमों द्वारा पश्चिमो भोगवादी संस्कृति के लिए अनुकूलता बनाना।
३. ईसा की २१ वीं शताब्दी, नयी सहस्राब्दि को अधिकाधिक प्रचारित करना, जिससे सिद्ध हो सके कि ईसा के जन्म से पूर्व कोई विश्व सभ्यता नहीं थी, जिसकी कालगणना आज जीवित हो।
४. हिन्दू की आक्रामक और अमानवीय छवि प्रचारित करना, जिससे अमेरिका, यूरोप आदि में बढ़ रहे हिन्दू प्रभाव को रोका जा सके।
५. हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों और विभिन्न हिन्दू संगठनों को लड़वाना तथा अपने प्रचार माध्यमों से उनको लड़ते प्रदर्शित करना।
६. सन् २००० तक प्रत्येक ग्राम-नगर व मुहल्ले तक ६ लाख चर्च निर्माण करना।

विदेशी चर्च की गुलामी

अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड और आस्ट्रेलिया आदि चार दर्जन से अधिक सेकुलर कहलाने वाले देशों से धन, पादरी और नन्स आते हैं। भारत में चर्च द्वारा संचालित ५६ संगठनों में से ४४ का केन्द्र भारत के बाहर के देशों में है। इन देशों से भारत की १२ हजार संस्थाओं को धन दिया जाता है।

X

X

X

X

- चार शताब्दियों में अफ्रीका से १ करोड़ मनुष्य गुलाम बनाकर यूरोप में बेंचे गये, इनमें से ६० प्रतिशत से अधिक १७२१ से १८२० के मध्य विके। फ्रांस, पुर्तगाल और अंग्रेज इसके मुख्य साझेदार थे। इंग्लैण्ड के १६० जलयान इसमें उपयोग होते थे। मानव को पशु के रूप में खरीदने-बेचने का यह घृणित व्यापार ईसाई चर्च के कार्य का एक भाग था।

“आप, मिशनरियों को शिक्षा, कपड़े और पैसे क्या इसलिए देते हैं कि वे मेरे देश में आकर मेरे सभी पूर्वजों को, मेरे धर्म को और जो भी मेरा है, उस सब को गालियाँ दें, भला बुरा कहें। वे मन्दिर के सामने खड़े होकर कहते हैं ‘ऐ ! मूर्तिपूजको तुम नरक में जाओगे, लेकिन हिन्दुस्तान के मुसलमानों से ऐसी ही बात करने की उनकी इसलिए हिम्मत नहीं होती कि कहीं तलवारें न खिंच जायें.... और आपके धर्माधिकारी जब भी हमारी आलोचना करें, तब वे यह भी ध्यान रखें कि यदि सारा हिन्दुस्तान खड़ा होकर सम्पूर्ण हिन्द महासागर की तलहटी में पड़े कीचड़ को पश्चिमी देशों पर फेंके, तो भी अन्याय का अंश मात्र ही परिमार्जन होगा जो आप लोग हमारे साथ कर रहे हैं।

— स्वामी विवेकानन्द (डेट्राइट में ईसाइयों की एक सभा में बोलते हुए)

उत्तिष्ठत् जाग्रत्

मानवता की रक्षा और विश्व के कल्याण के लिए हिन्दू जीवन-पद्धति ही एकमेव प्रभावी साधन है। हिन्दुत्व के प्रभावी होने से ही पर्यावरण रक्षा से लेकर प्रकृति का सन्तुलन तक संभव है।

हिन्दू धर्म वैज्ञानिक, तर्कसंगत व अन्य मतों को स्वीकार करने वाली जीवन-पद्धति है। वसुधैव कुटुम्बकम् का विश्वासी हिन्दू है, इसलिए वह विश्व के जिस देश में भी गया वहाँ के विकास में सहभागी बना। मारीशस, फिजी, सूरीनाम ही नहीं अमेरिका जैसे बड़े देशों की प्रगति में भी वहाँ रहने वाला हिन्दू सहभागी है। परन्तु ईसा और मुहम्मद के अनुयायी जहाँ भी गये, अलग देश की माँग और खून-खराबे को बढ़ाने वाले ही रहे हैं। इतिहास इसका साक्षी है।

विश्व में हिन्दू जीवन मूल्य प्रभावी हो, इसके लिए आवश्यक है कि भारत में उसको शक्तिशाली बनाया जाय। अनेकों महापुरुषों के प्रभाव से अपनी भारत माता गुलामी के काल की तंद्रा को तज, विषमताओं से मुक्त हो, कुरीतियों को त्यागकर फिर खड़ी हो रही है। विश्व के अनेक भविष्यवक्ता, महापुरुष घोषणा कर चुके हैं कि आगामी शताब्दी हिन्दू शताब्दी है।

आवश्यकता है हीनता-दीनता को छोड़कर एक बार कमर कसकर खड़े होने की। आइये ! हम भी उठें, चुनौतियों को स्वीकारें—

**समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ है समय लिखेगा, उनके भी अपराध॥**

ईसाइयत के विषय में महापुरुषों के कथन

आधुनिक विज्ञान के जनक सर आइजक न्यूटन

“कैथोलिक चर्च द्वारा प्राचीन सच्चे धर्म को भ्रष्ट किया गया है। ये मांक (पादरी) अपने को बहुधा नग्न महिलाओं के दर्शनों से क्यों प्रताड़ित करते हैं ?”

“ये नन्स इन पादरियों की रखैल से कम कुछ नहीं हैं, और वे बर्बर इनको रस्सी द्वारा बाँधकर गरम लोहे की सलाखों से दागते हैं।”

प्रसिद्ध साहित्यकार बरनार्ड शॉ

“जिनकी शिक्षा का आधार बाइबिल रही है, वे पूर्णतः कुसूचित हैं; वे सार्वजनिक नौकरी, पैतृक उत्तरदायित्व अथवा मतदान के लिए अयोग्य हैं।”

साहित्यकार एच.जी. वेल्स

रोमन कैथोलिक चर्च आज की दुनिया की सबसे बड़ी बुराई है।

समाजशास्त्री लेखक जैक टी. चिक

रोमन कैथोलिक चर्च जब अल्पमत में होती है, तो मेमने की तरह शालीन; बराबर होती है, तो लोमड़ी की तरह चालाक और जब बहुमत में होती है, तो प्रभुत्व बनाने के लिए चीते की तरह आक्रामक एवं मारने व अंगहीन करने को तत्पर रहती है।

महान् दार्शनिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन

तुम्हारा क्राइस्ट तुम्हें एक उत्तम स्त्री और पुरुष बनाने में सफल न हो सका, तो हम कैसे मान लें कि वह हमारे लिए अधिक प्रयास करेगा, यदि हम ईसाई बन भी जायें।



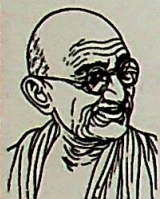
“जब हिन्दू समाज का एक सदस्य मतान्तरण करता है, तो समाज की एक संख्या कम नहीं होती, बल्कि हिन्दू समाज का एक शत्रु बढ़ जाता है।”

— स्वामी विवेकानन्द

“यदि तुम तीस करोड़ (तत्कालीन भारत में हिन्दू जनसंख्या) लोग मिशनरी लोगों की धमकियों में आ गये, तो तुम सब कायर हो और कुछ भी कहने के अधिकारी नहीं हो।”

— स्वामी विवेकानन्द

(६ मई १८९५ को अमेरिका से अपने शिष्यों को पत्र
विवेकानन्द साहित्य खण्ड-४, पृष्ठ - २८२)



यदि वे पूरी तरह से मानवीय कार्यों तथा गरीबों की सेवा करने के बजाय डाक्टरी सहायता, शिक्षा आदि के द्वारा धर्म-परिवर्तन करेंगे, तो मैं उन्हें निश्चय ही चले जाने को कहूँगा। प्रत्येक राष्ट्र का धर्म अन्य किसी राष्ट्र के धर्म के समान ही श्रेष्ठ है। निश्चय ही भारत का धर्म यहाँ के लोगों के लिए पर्याप्त है। हमें धर्म-परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं।

— महात्मा गांधी

(गांधी वाङ्मय खण्ड ४५, पृष्ठ ३३९)



यह एक भयानक सत्य है कि ईसाई बनने से अराष्ट्रीय होते हैं। साथ ही यह भी तथ्य है कि ईसाइयत, मतान्तरण के बाद भी जातिवाद नहीं मिटा सकती।

— डॉ. भीमराव अम्बेडकर,

भारतीय संविधान निर्माता

(Writing and Speeches Vol. 5 Page 456)



एशिया में ईसाइयत के लिए कोई जगह नहीं है। हिन्दू धर्म को जो खतरा उत्पन्न करेगा, वह खुद खत्म हो जायेगा।

— जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती

(कांची कामकोटि पीठ)